www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मा वा अरे ज्ञातव्यः

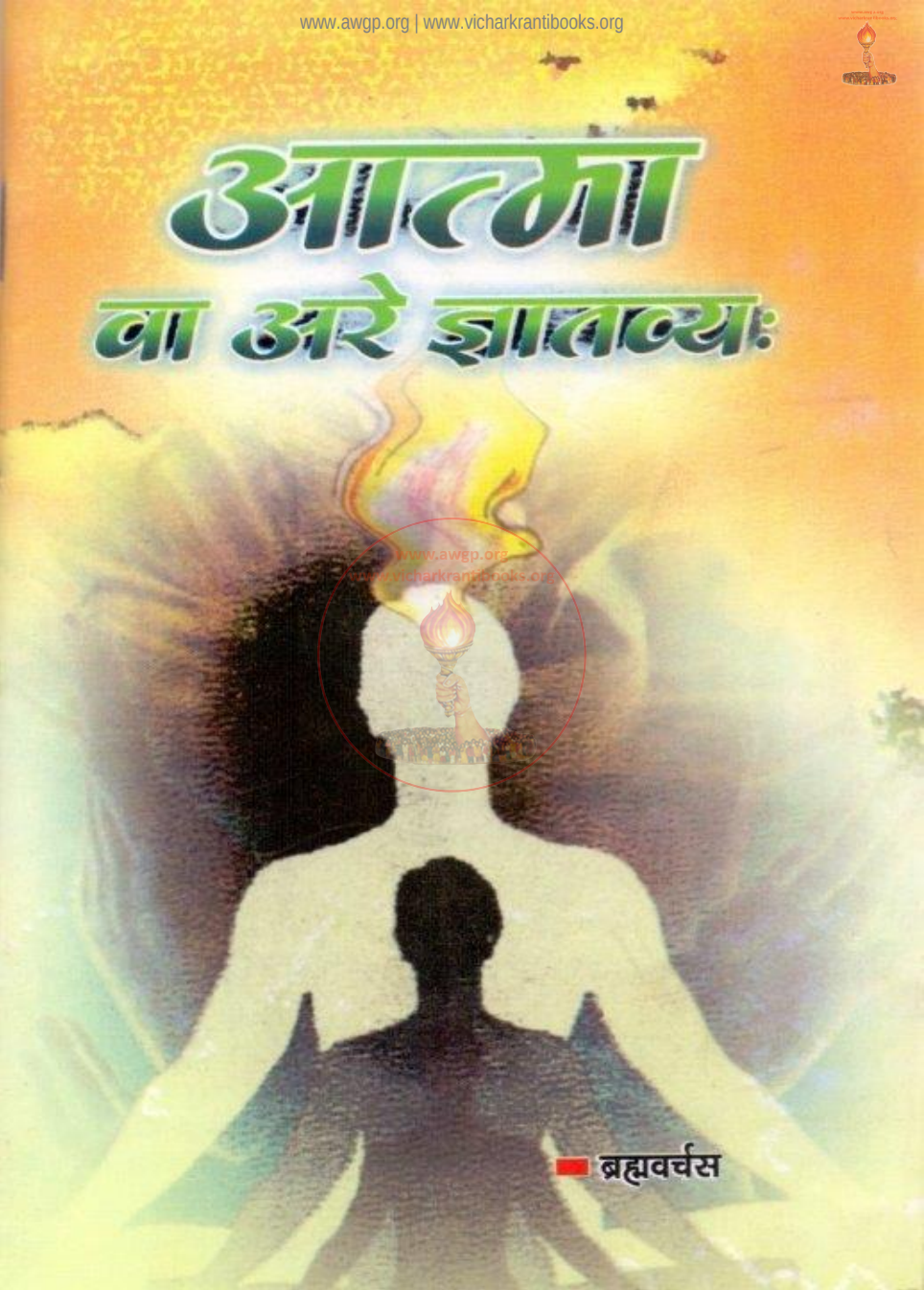

ब्रह्मवर्चस

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मा वा अरे ज्ञातव्यः

लेखक
ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१३ मूल्य : ९.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पृष्ट पुस्तक का नाम पेज नं.

१.	शरीर का ही नहीं-आत्मा का भी ध्यान रखें	३
२.	आत्मा वा अरे श्रोतव्य:	१७
३.	आत्मज्ञान की आवश्यकता	२८
४.	चेतन आत्मा का चिन्तन	४०

आत्मा को क्यों खोजना चाहिए और उसकी ही जिज्ञासा क्यों करनी चाहिए ? इसका उत्तर है कि संसार का वास्तविक तत्त्व आत्मा ही है। जो जरा-मरण से रहित, शोक से मुक्त, नित्य और अविनाशी है, उसका ज्ञान हो जाने से मनुष्य उसकी भाँति भय, शोक, चिन्ता और मरण धर्म से मुक्त हो जाता है, अजर और अमर होकर, सांसारिक लोगों एवं अनुभवों से ऊपर उठकर चिर अविनाशी पद प्राप्त कर लेता है। इस नाशवान् मानव-जीवन को इससे बड़ी और इससे ऊँची उपलब्धि अन्य क्या हो सकती है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शरीर का ही नहीं-आत्मा का भी ध्यान रखें

इस बात से जरा भी इनकार नहीं किया जा सकता कि मानव जीवन में शरीर का महत्त्व कम नहीं है। शरीर की सहायता से ही संसार यात्रा संभव होती है। शरीर द्वारा ही हम उपार्जन करते हैं और उसी के द्वारा हम सारी क्रियाएँ सम्पन्न करते हैं। यदि मनुष्य को शरीर प्राप्त न हो, तो वह तत्त्व रूप से कुछ भी करने में समर्थ न हो।

यदि एक बार मानव-शरीर के इस महत्त्व को गौण भी मान लिया जाये, तब भी शरीर का यह महत्त्व तो प्रमुख है ही कि आत्मा का निवास उसी में होता है। उसे पाने के लिए किए जाने वाले सब प्रयत्न उसी के द्वारा सम्पादित होते हैं। सारे आध्यात्मिक कर्म जो आत्मा को पाने, उसे विकसित करने और बन्धन से मुक्त करने के लिए अपेक्षित होते हैं, शरीर की सहायता से ही सम्पन्न होते हैं। अतः शरीर का महत्त्व बहुत है। तथापि जब इसको आवश्यकता से अधिक महत्त्व दे दिया जाता है, तब यही शरीर जो संसार बन्धन से मुक्त होने में हमारी एक मित्र की तरह सहायता करता है, हमारा शत्रु बन जाता है। अधिकार से अधिक शरीर की परवाह करने और उसकी इन्द्रियों की सेवा करते रहने से, शरीर और उसके विषयों के सिवाय और कुछ भी याद न रखने से वह हमें हर ओर से विभोर बनाकर अपना दास बना लेता है और दिन-रात अपनी ही सेवा में तत्पर रखने के लिए दबाव में आ जाने वाला व्यक्ति कमाने-खाने और विषयों को भोगने के सिवाय-इससे आगे की कोई बात सोच ही नहीं पाता। उसका सारा ध्यान शरीर और उसकी आवश्यकताओं तक ही केन्द्रित हो जाता है। वह शरीर और इन्द्रियों की क्षमता में बँधकर अपनी सारी शक्ति जिसका उपयोग महत्तर कार्यों में किया जा सकता है, शरीर की सेवा में समाप्त कर देता है। इस प्रकार उसका जीवन व्यर्थ चला जाता है और उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसके हृदय में एक पश्चाताप रह जाता है, जिसके लिए वह बहुमूल्य मानव-जीवन प्राप्त हुआ है। इसलिए मनुष्य को इस विषय में पूरी तरह से सावधान रहने की आवश्यकता है कि शरीर का कितना महत्त्व है और अपनी सेवा पाने का उसे कितना अधिकार है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शरीर की सेवा तक सीमित हो जाने की भूल-मनुष्य से प्रायः तब होती है, जब वह शरीर को ही सब कुछ समझ लेता है। सत्य बात तो यह है कि मनुष्य शरीर नहीं, आत्मा है। शरीर तो साधन मात्र है, साध्य केवल आत्मा ही है। इसलिए प्रधान महत्त्व शरीर को नहीं आत्मा को ही देना चाहिए, न की आत्मा को शरीर के अधीन कर देना चाहिए। जो इस नियम एवं अनुशासन का उल्लंघन करते हैं, वे आत्मा के हित की हानि करने वाली भयानक भूल करते हैं, जो निश्चित रूप से शोक, खेद और पश्चाताप का विषय है।

शारीरिक स्वार्थ का महत्त्व है, लेकिन एक सीमा तक। उसी सीमा तक जहाँ तक वह स्वस्थ सशक्त और सक्षम बना रहे। वह अशक्यता तथा अल्पायु से बचा रहे। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए उपार्जन करता है और सुख-सुविधा, मनोरंजन आदि की व्यवस्था भी; किन्तु सच्चा स्वार्थ आत्मा का ही है। उसी की पूर्ति और उसी का हित-साधन करने को प्रधनता दी जानी चाहिए; क्योंकि मानव-जीवन का उद्देश्य यही है और इसी के लिए यह अनुग्रह भी किया गया है।

आवश्यकता से अधिक शरीर सेवा में लगे रहने से शरीर पुष्ट हो जाता है। उसकी जड़ता प्रबल हो जाती है, आवश्यकताएँ वितृष्णा के स्तर पर पहुँच जाती हैं और तब मनुष्य मोह-लोभ-मत्सर आदि ऐसे विकारों से ग्रसित हो जाता है, जो स्पष्टतः आत्मा के शत्रु माने गये हैं। यह विकार अपना अस्तित्व पाकर मानव जीवन को पतन की ओर ही प्रेरित करते हैं, उनका ऐसा करना स्वाभाविक ही है। मनुष्य को पतन की ओर ले जाना विकारों का सहज धर्म है, इसके लिए उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता। दोषी तो वास्तव में वह मनुष्य है, जो इनसे अपनी रक्षा का प्रबन्ध नहीं करता। बिच्छू का धर्म है डङ्क मारना, तो इसके लिए बिच्छू को दोष नहीं दिया जा सकता। दोष उस व्यक्ति को ही दिया जाएगा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिसने उस कुटिल कीट को कष्ट पहुँचाने का अवसर अपने प्रमाद के कारण दिया। एक मात्र शरीर की सेवा में निरत रहने से उक्त विकार जन्मेंगे, पनपेंगे और अपना अस्तित्व पाकर मनुष्य को धर्मतः पतन की ओर खीचेंगे। अस्तु; अपनी रक्षा के लिए मनुष्य को चाहिए कि वह प्रधानता शरीर को नहीं आत्मा को दे और उसी के हित साधन में निरत हो, उसी का कल्याण करे।

शरीर को अपेक्षित अधिकार देकर जो बुद्धिमान व्यक्ति शेष समय तथा रुचियाँ आत्मा के स्वार्थ में, उसकी सेवा करने में लगाते हैं, वे लोक में सुख और परलोक में श्रेय के अधिकारी बनते हैं। शरीर की सेवा जहाँ मनुष्य को पतन के गर्त में गिराकर रोग-शोक, सन्ताप, पश्चाताप आदि की यातना दिलाकर भव-पाशों में लपेटती जाती है, वहाँ आत्मा की सेवा में मनुष्य अलौकिक सुख, हर्ष-उल्लास, आनन्द आदि के साथ मोक्ष एवं मुक्ति का पुरस्कार पाता है। अवश्य ही शरीर की उपेक्षा मत कीजिए। कमाइए, खाइए, गृहस्थी बसाइये, सुख और सम्पत्ति के अधिकारी बनिए, लेकिन उसमें इस सीमा तक न डूब जाइए कि इसके सिवाय और कुछ सूझ ही न पड़े। शरीर और संसार में उतना ही समय, श्रम और मनोयोग लगाना चाहिए, जितना आवश्यक है और जिससे जीवन की गाड़ी सुविधापूर्वक चलती रहे। शेष सारा समय, श्रम तथा मनोयोग आत्मा का हित-साधन करने में लगाना चाहिए, जिससे स्वार्थ, परमार्थ और लोक के साथ परलोक भी बनता चले।

आत्मिक कल्याण आवश्यक होने के साथ-साथ थोड़ा कठिन भी है। कठिन इसलिए कि मनुष्य प्रायः जन्म-जन्म के संस्कार अपने साथ लाता है। वे संस्कार प्रायः भौतिक अथवा शारीरिक ही होते हैं। इसका प्रमाण यह है कि जब मनुष्य का देहाभिमान नष्ट हो जाता है, तो वह मुक्त हो जाता है। उसे शरीर धारण करने की लाचारी नहीं रहती। चूँकि सभी मनुष्यों की अभिव्यक्ति शरीर में हुई, इसलिए यह सिद्ध है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कि उसमें अभी शारीरिक संस्कार बने हुए हैं। पूर्व संस्कारों पर विजय पाकर चाहे आधुनिक रूप में मोड़ लेना-या यों कह लिया जाय कि शारीरिक संस्कारों को आत्मिक संस्कारों के स्थानापन्न कर लेना सहज नहीं होता। संस्कार बड़े प्रबल व शक्तिशाली होते हैं। इन दैनिक संस्कारों को बदलने का सरल-सा उपाय यह है कि जिस प्रकार सांसारिक कामों और शारीरिक आवश्यकताओं की चिन्ता की जाती है, उसी प्रकार आत्म-कल्याण की चिन्ता की जाए। जिस प्रकार सांसारिक सफलताओं के लिए निर्धारित एवं सुनियोजित कार्यक्रम बनाकर प्रयत्न तथा पुरुषार्थ किया जाता है, उसी प्रकार मनोयोगपूर्वक आध्यात्मिक कार्यक्रम बनाए और प्रयत्नपूर्वक पूरे किए जाते रहें। इस प्रकार यदि मनुष्य अपने विचार-कोंण के साथ-साथ पुरुषार्थ की धारा बदल डाले तो निश्चय ही उसके संस्कार परिवर्तित हो जायेंगे और वह शरीर की ओर से मुड़कर आत्मा की ओर चल पड़ेगा।

संसार बदलने का प्रयत्न करने के साथ-साथ यह भी देखते चलना आवश्यक है कि संस्कारों में अपेक्षित परिवर्तन घटित हो भी रहा है या नहीं। इसकी पहचान यह है कि जब आप देखें कि आत्म-कल्याण के कार्यक्रमों को सफलता के लिए वैसी ही चिन्ता रहती है, जैसी कि घर गृहस्थी के कामों और आर्थिक योजनाओं को सफल बनाने की, तब समझ लें कि संस्कारों में परिवर्तन आरम्भ हो गया है। यदि भौतिक सफलता की चिन्ता की तरह आध्यात्मिक सफलता की चिन्ता नहीं होती, तो समझ लेना चाहिए कि उस दिशा में उचित प्रगति नहीं हो रही है। आप जो कुछ भी आध्यात्मिक प्रयत्न कर रहे हैं, वह सब यों ही एक बेगार अथवा मनोरंजन के लिए कर रहे हैं। उसमें आपका पूरा-पूरा मानसिक योग नहीं है और अपने उत्तरदायित्व के रूप में उक्त प्रयत्न का मूल्यांकन नहीं किया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संस्कारों में परिवर्तन लाने के लिए इस प्रकार के हलके-फुलके दिखाऊ प्रयत्न करने से काम न चलेगा, इस कर्त्तव्य को जीवन लक्ष्य के उत्तरदायित्व की भावना से ही करना होगा। बहुत से लोग आवेश में आकर जोश-खरोश के साथ संस्कार बदल डालने में सहसा जुट पड़ते हैं। इस प्रकार का असात्विक प्रयत्न भी वांछित सफलता सम्पादित करने में कृतकृत्य न होगा। ज्वार की तरह उठा हुआ कोई भी जोश कुछ ही दिनों में ठण्डा पड़ जाता है। संस्कारों में वांछित परिवर्तन लाने के लिए सात्विकी निष्ठा के साथ आध्यात्मिक कार्यक्रम अपनाकर और उत्तरदायित्व के साथ उन्हें पूरा करना होगा। प्रगति यदि कम भी है, लेकिन गति में एक दृढ़ता है तो चिन्ता की बात नहीं है। कभी न कभी वह काम पूरा हो जाएगा; किन्तु यदि प्रगति के चरण तो लम्बे-चौड़े दीखते हैं और गति में दृढ़ता नहीं है, तो निश्चय ही शीघ्र थकान घेर लेगी और उदासीनता गतिहीन हो जाने के लिए विवश कर देगी। संस्कारों में परिवर्तन लाने की योजना तभी सफल होगी, जब स्थिति के अनुसार व्यावहारिक कार्यक्रम बनाया जाए और दृढ़तापूर्वक एक-एक कदम बढ़ाया जाए। ऐसा करने से ही संस्कारों में परिवर्तन सम्भव है अन्यथा नहीं। जिस दिन अध्यात्म विषयक कार्यक्रमों में अधिक आनन्द और उत्साह अनुभव होने लगे शरीर की अपेक्षा आत्मा की चिन्ता अधिक रहने लगे, तो समझना चाहिए कि संस्कार बदल गए हैं और अब शीघ्र ही हमारा जीवनयान भवसागर के उस तट की ओर चल पड़ा है, जिस पर कल्याण-कुसुमों से सुशोभित वनस्पति लहलहा रही है।

मनुष्य शरीर नहीं आत्मा है। उसे चाहिए कि वह शरीर की अपेक्षा आत्मा को अधिक महत्त्व दे। आत्मा का स्वार्थ ही सच्चा स्वार्थ है, जिसे परमार्थ के नाम से भी पुकारा जाता है। परमार्थ पथ पर अग्रसर होने के लिए आवश्यक है कि दैहिक संस्कारों के स्थान पर आत्मिक संस्कारों की स्थापना की जाय। इसके लिए आध्यात्मिक कार्यक्रमों को निर्धारित कर उनकी सफलता के लिए चिन्तापूर्वक उसी प्रकार प्रयत्न करना होगा, जिस प्रकार भोजन, वस्त्र और घर गृहस्थी की चिन्ता की जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानव-जीवन का लक्ष्य आत्म-कल्याण है इस लक्ष्य को पाने के लिए आत्मा को शरीर के ऊपर प्रधानता दी जाय। यह क्रिया विचार-दृष्टिकोण बदल देने से सहज में पूरी हो सकती है। हम मनुष्य हैं, शरीर ही सब कुछ है। इसकी सेवा करना हमारा कर्त्तव्य है, इस प्रकार के दैहिक विचारों के स्थान पर इन विचारों को स्थापित करना होगा-हम आत्मा हैं। शरीर तो साधन मात्र है। आत्मा का कल्याण करना ही हमारा परम धर्म है, जिसका निर्वाह हर मूल्य पर करना ही है। इस प्रकार मनुष्य शारीरिक दासता से बचकर आत्मा की सेवा में समर्पित हो जाएगा। जिससे उसे यह पश्चाताप करने का अवसर नहीं रहेगा कि-"हाय मैंने अज्ञान के वशीभूत होकर अमर आत्मा की उपेक्षा कर दी और अपना सारा जीवन उस शरीर की सेवा में लगा दिया, जो नश्वर है और जिसकी दासता पतनकारी विचार देने के सिवाय और कुछ नहीं दे पाती।" शरीर का महत्त्व तो समझें, पर आत्मा का महत्त्व कम करके न आँकें।

दो वस्तुओं के मिलने से एक तीसरी चीज बनती है। दिन और रात्रि की मिलन वेला को संध्या कहते हैं। संध्या न रात्रि है और न दिन, पर ध्यान-पूर्वक देखा जाय, तो उसमें दोनों का ही अस्तित्व मौजूद है। सोडा कास्टिक और तेल मिलकर साबुन बन जाता है। साबुन न तेल के सदृश है और न सोडा के। उसका स्वरूप दोनों से भिन्न है। फिर भी परीक्षण के बाद उन दोनों ही वस्तुओं का साबुन में अस्तित्व प्रमाणित हो जाता है। प्राणी भी ऐसे ही सम्मिश्रणों का एक तीसरा रूप है। परब्रह्म परमात्मा और पंच भौतिक प्रकृति इन दोनों के सम्मिश्रण से जो तीसरी सत्ता उत्पन्न होती है उसका नाम जीव है। ब्रह्म चेतन है इसलिए उसका गुण आत्मिक चेतना, अन्तःकरण एवं भावना के रूप में मौजूद है। प्रकृति जड़ है इसलिए शरीर का सारा ही ढाँचा जड़ है। जीव की चेतना एवं प्रेरणा से वह चलता है। जब वह चेतना तनिक भी अशक्त या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अस्त-व्यस्त होती है, तो शरीर का सारा ढाँचा ही लड़खड़ा जाता है, सारा खेल ही खत्म हो जाता है। साइकिल चलाने वाले के पैरों में जब तक दम है, तभी तक पहिये घूमते हैं। जब पैर थक गए, तो साइकिल का चलना भी बन्द हो जाता है। शरीर में जो क्रियाशीलता दिखाई पड़ती है, वह जीव की उपस्थिति और शक्ति का चिह्न है। यह शक्ति कुण्ठित होते ही शरीर दुर्बल, वृद्ध, रुग्ण और मृतक बन जाता है और तब वह घृणित लगने लगता है। निर्जीव होने पर तो जल्दी से जल्दी उसकी अन्त्येष्टि ही करनी पड़ती है। पंचतत्त्व अपने तत्त्वों में मिल जाते हैं वह सम्मिश्रण समाप्त हो जाने से दोनों को अपने-अपने स्वतन्त्र रूप में पहुँच जाना पड़ता है।

जड़ और चेतन के अपने-अपने गुण धर्म भी हैं। ईश्वर चेतन है इसलिए उसका अंश जीव-चेतना तो है ही, साथ ही उसमें वे सब विशेषताएँ भी बीज रूप में मौजूद हैं, जो उसके मूल उद्गम ब्रह्म में ओतप्रोत हैं। ईश्वर सत्चित् और आनन्द स्वरूप है। जीव में ही-सत्य में ही प्रसन्नता तथा सन्तोष अनुभव करने की प्रकृति है। कोई व्यक्ति स्वार्थवश स्वयं भले ही दूसरों से असत्य व्यवहार करे; पर उसके साथ दूसरे जब, झूँठ, छल, कपट, विश्वासघात का व्यवहार करते हैं, तो बड़ा अप्रिय लगता है और दुःख होता है। हर किसी को यही पसन्द होता है कि दूसरे उसके साथ पूर्ण निष्कपट तथा सचाई का व्यवहार करें, छल और धोखे की बात सुनते ही मन में भय, आशंका और उत्पन्न होती है। इससे स्पष्ट है कि जीव अपने उद्गम केन्द्र ब्रह्म का सत् गुण अपने में गहराई तक धारण किए हुए है।

चित् अर्थात् चेतना-सक्रियता। जीव भी ईश्वर की भाँति ही आजीवन, निरन्तर सक्रिय रहता है। सोते समय, मूर्छा के समय केवल मस्तिष्क का एक छोटा भाग अचेत होता है। बाकी समस्त शरीर हर घड़ी काम करता रहता है। रक्त संचार, श्वास प्रश्वास, पाचन, स्वप्न आदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की क्रियाऐं बराबर चलती रहती हैं, शरीर के सभी कल-पुर्जे अचेतन कहे जाने वाले मस्तिष्क के सहारे ठीक वैसा ही काम करते रहते हैं, जैसे जागते रहने पर होता था। विचार, भावना, विवेक, उत्साह, स्फूर्ति एवं क्रियाशीलता को चेतना का ही अङ्ग कहा जाएगा। ईश्वर चित् अर्थात् चेतन है, तो जीव भी वैसा ही क्यों न रहेगा? जब परमात्मा की सत्ता समस्त ब्रह्माण्ड में व्यापक होकर असंख्य प्रकार की प्रक्रियाएँ निरन्तर संचारित रखती हैं, तो जीव भी पिण्ड में- शरीर में व्याप्त होकर अहर्निश अपना चेतन व्यापार क्यों जारी न रखेगा?

परमात्मा आनन्द स्वरूप है। उसकी प्रत्येक क्रिया आनन्दपूर्ण है, आनन्द के लिए है। आनन्द उद्भव एवं विस्तार करने के लिए है। उसने क्रीड़ा करने के लिए-खेल खेलने के लिए-विनोद और मनोरंजन के लिए यह सारा संसार रचा है। लीलाधर की लीलाएँ उसी के स्वयं के लिए ही नहीं; वरन् प्रत्येक चराचर के लिए आह्लाद और उल्लास प्रदान करने वाली हैं। प्राणी भी आनन्द की ही खोज में निरन्तर संलग्न रहता है। उसे अपनी रुचि के अनुसार जहाँ कहीं भी आनन्द दीखता है, वहीं जा पहुँचता है, जो वस्तुएँ उसे आनन्ददायक लगती हैं, उन्हें ही प्राप्त करने की चेष्टा करता है। सच्चा आनन्द और झूँठा आनन्द परखने में भूल हो सकती है, पर इतना निश्चित है कि हर प्राणी आनन्द चाहता है और अपनी परिष्कृत अथवा अपरिष्कृत बुद्धि के अनुसार जहाँ भी आनन्द दिखाई पड़ता है, वहीं रहना चाहता है, उसी को प्राप्त करना चाहता है। इसी चाहना, आकांक्षा के लिए उसका प्रायः सारा ही जीवन उत्सर्ग होता है।

सत्, चित् आनन्द का सम्मिश्रित रूप ही ब्रह्म है। चूँकि हम सब इन तीनों ही को चाहते हैं और इन्हें ही अधिक मात्रा में प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। इसलिए यही कहना होगा कि हमारी प्रवृत्ति ब्रह्म

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राप्ति की दिशा में है। यही हमारी प्रकृति भी है। इस संसार में समस्त जड़ चेतन अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार प्रवृत्तिरत है। जीव भी इसका अपवाद नहीं हो सकता। उसे ब्रह्म प्राप्ति ही अभीष्ट है। उसके बिना इसका काम क्षण भर भी नहीं चल सकता, इस प्रकृति के विरुद्ध उसे क्षण भर भी चैन नहीं पड़ सकता।

इतना होते हुए भी देखा यह जाता है कि प्राणी अनैतिक, दुष्कर्मों में अधिक रुचि लेता हुआ आलस्य अहंकार, वासना और तृष्णा के फेर में पड़ा हुआ लोभवश उस ओर चलता है जिस ओर अन्धकार और असन्तोष ही उपलब्ध होने वाला है। इसका कारण जड़ता का जीव पर पड़ने वाला प्रभाव ही है। यह स्पष्ट है कि प्राणी जड़ और चेतन तत्त्वों का सम्मिश्रित रूप है। चेतन तत्त्व-ब्रह्म की स्थिति उसे सत् चित् और आनन्द की ओर उन्मुख रखती है; किन्तु जड़ता के प्रभाव से भी वह अछूता नहीं रहता। प्रकृति की, माया की, जड़ता की छाया भी उस पर बनी रहती है। इस प्रभाव के कारण ही उसे अपना मार्ग निश्चित करने में उचित गतिविधियाँ अपनाने में बाधा पड़ती है। इसी खींच-तान में वह दिग्-भ्रान्त हो जाता है।

जड़ता का प्रभाव जीव पर जितना अधिक होगा, उतना ही वह जड़ पदार्थों से प्रेम अधिक करेगा, उनका स्वामित्व, संग्रह एवं उपभोग उतना ही उसे अधिक रुचेगा। आलस्य, मोह और अहङ्कार यह जड़ता के प्रधान चिह्न हैं। जड़ पदार्थ निर्जीव हैं, इसलिए जिनमें जड़ता बढ़ेगी, वह उतना ही आलसी बनता जाएगा। प्रयत्न, पुरुषार्थ परिश्रम में रुचि न होगी, अध्ययन, भजन एवं सत्कार्यों में मन न लगना इस बात का चिह्न है कि चित् ईश्वरीय तत्त्व का विरोधी 'आलस्य' आसुरी, तत्त्व अपने अन्दर भर रहा है। उसी प्रकार वस्तुओं को उपकरण मात्र मानकर उनसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सामयिक लाभ उठा लेने की बात न सोच कर उपलब्ध सम्पदा को मौरुसी मान बैठना, उसके छिनने पर रोना चिल्लाना यह प्रकट करता है कि नाशवान् और निर्जीव पदार्थों के प्रति अवांछनीय ममता जोड़ ली गयी है, अहंकार तो असुरता का-तमोगुण का- प्रत्यक्ष चिह्न है। क्षण में बदलती रहने वाली वस्तुओं और परिस्थितियों की अनुकूलता पर जो घमण्ड करता है, वह यह भूल जाता है कि इस संसार का प्रत्येक परमाणु अत्यन्त द्रुतगति से अपनी धुरी पर घूमता है और प्रत्येक परिस्थिति के साथ उलटता-पलटता रहता है। फिर पानी में उठने वाले बबूले की तरह इस क्षण-प्राप्त सौभाग्य पर इतराना क्या? ऐंठना और अकड़ना क्या? जो आज है वह कल कहाँ रहने वाला है, फिर अहंकार करने का प्रश्न ही कहाँ उत्पन्न होता है?

लोभ और मोह के वशीभूत होकर वासना और तृष्णा से प्रेरित होकर प्राणी विविध प्रकार के अकर्म और दुष्कर्म करता हुआ जीवन के बहुमूल्य क्षणों का दुरुपयोग करता है। यही अज्ञान है यही माया है यही अविद्या है। एक ओर आत्मा की सत्‌चित और आनन्द की मूल प्रकृति उसे उच्च भूमिका की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है। दूसरी ओर जड़ता एवं माया का प्रकोप जीव के ऊपर होता रहता है। एक दिशा में दैवी प्रकृति खींचती है दूसरी ओर आसुरी प्रकृति जोर लगाती है। फलस्वरूप धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र अन्तःकरण में अशान्ति और असंतोष का महाभारत मचा रहता है। जड़ता हमें बंधन में बाँधती है और चेतना मुक्ति का संदेश प्रदान करती है।

इस रस्सा-कशी में जीतता वही है। जिस पर आत्मा अपनी स्वीकृति की मुहर लगा देती है। उसका वोट जिस तरफ पड़ता है, उधर ही जीत हो जाती है। किसी बच्चे पर दो मातायें दावा करें, तो न्यायाधीश उस पक्ष में फैसला देता है जिसे बच्चा पहचान ले और जिसके पास जाना पसन्द करे। जड़ता और चेतना ऐसी ही माता और विमाता है। दोनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही आत्मा पर अपना दावा करती हैं और उसे अपने पक्ष में फुसलाना चाहती हैं। अच्छाई इतनी ही है कि फैसला आत्मा की अभिरुचि के ऊपर निर्भर रखा गया है। पतन और उत्थान के दोनों ही मार्ग उसके लिए खुले हुए हैं। वह जिसे चाहे उसे पसन्द कर सकती है।

जीव पर दैवी और आसुरी दोनों ही चेतनाओं का प्रभाव है। वह जिस ओर उन्मुख होगा, वैसा ही उसका स्वरूप बनता जायेगा। जड़ता एवं माया में लिप्त होते चलने पर वह अधोगति का अधिकारी होता है और पाप, पतन नरक की दुर्गति में निमग्न होता जाता है। पर यदि वह अपनी मूल प्रकृति सत्-चित्-आनन्द का निर्वाह करता चले, तो बन्धन से मुक्ति निश्चित है; फिर उसे पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं होती। आवश्यकता अपना सही स्वरूप जानने की है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मन से छीनकर प्रधानता आत्मा को दीजिए-

मनुष्य सामान्यतः जो बाह्य में देखता सुनता और समझता है, वह यथार्थ ज्ञान नहीं होता; किन्तु यह भ्रमवश उसी को यथार्थ ज्ञान मान लेता है। अवास्तविक ज्ञान को ही ज्ञान समझकर और उसके अनुसार ही कार्यों को करने के कारण ही मनुष्य अपने मूल उद्देश्य सुख शान्ति की दिशा में अग्रसर न होकर विपरीत दिशा में चल पड़ता है।

यथार्थ ज्ञान का अनुभावक मनुष्य की अन्तरात्मा ही है। शुद्ध. बुद्ध एवं स्वयं चेतन होने से उसको अज्ञान का अन्धकार कभी नहीं व्याप सकता परमात्मा का अंश होने से वह उसी तरह, सत् एवं आनन्दमय है। जिस प्रकार परमात्मा के समीप असत्य की उपस्थिति असम्भव है, उसी प्रकार उसके अंश आत्मा में भी असत्य का प्रवेश सम्भव नहीं है।

मनुष्य का अन्तरात्मा जो कुछ देखता, सुनता और समझता है वही सत्य है, वही यथार्थ ज्ञान है। अन्तरात्मा से अनुशासित मनुष्य ही सत्य के दर्शन तथा यथार्थ ज्ञान की उपलब्धि कर सकता है। यथार्थ ज्ञान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की उपलब्धि हो जाने पर मनुष्य के सारे शोक सन्तापों एवं दुःख द्वन्द्वों का स्वतः समाधान हो जाता है। जहाँ प्रकाश होगा वहाँ अन्धकार और जहाँ ज्ञान होगा वहाँ दुःख रह ही नहीं सकता। प्रकाश का अभाव ही अन्धकार है और ज्ञान की अनुपस्थिति ही दुःख है। दुःख का कोई अपना मौलिक अस्तित्व नहीं।

अन्तरात्मा की बात सुनना और मानना ही उसका अनुशासन है। शङ्का हो सकती है कि क्या मनुष्य की अन्तरात्मा बोलती भी है? हाँ, मनुष्य की अन्तरात्मा बोलती है; किन्तु उसकी वाणी स्थूल, ध्वनिपूर्ण नहीं होती। वह सूक्ष्माति सूक्ष्म होती है, जिसे बाह्य एवं स्थूल श्रवणों से नहीं सुना जा सकता। मनुष्य की अन्तरात्मा बोलती है; किन्तु मौन विचार स्फुरण की भाषा में, जिसे मनुष्य अपनी कोलाहलपूर्ण मानसिक स्थिति में नहीं सुन सकता। अन्तरात्मा की वाणी सुनने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य का मानसिक कोलाहल बन्द हो।

अन्तरात्मा का सान्निध्य मनुष्य को उसकी आवाज सुनने योग्य बना देता है। यों तो मनुष्य की अन्तरात्मा उसमें सदा ओत-प्रोत है; किन्तु वह तब तक उसका सच्चा सान्निध्य नहीं पा सकता, जब तक वह उससे परिचय नहीं करता, उसे जान नहीं पाता। परिचयहीन निकटता भी एक दूरी ही होतीहै। रेल-यात्रा में कन्धे से कन्धा मिलाए बैठे दो आदमी अपरिचित होने के कारण समीप होने पर भी एक दूसरे से दूर ही होते हैं। अजनवी आदमी को छोड़ दीजिए जिन्दगी भर एक दूसरे के पास रहने पर भी आन्तरिक परिचय के अभाव में एक दूसरे से दूर ही रहते हैं। वे कभी भी एक-दूसरे को ठीक से नहीं समझ पाते।

अन्तरात्मा को जानने का एक ही उपाय है कि उसके विषय में सदा जिज्ञासु एवं सचेत रहा जाये। जो जिसके विषय में जितना अधिक जिज्ञासु एवं सचेत रहता है, वह उसके विषय में उतनी ही गहरी खोज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करता है और निश्चय ही एक दिन उसे पा लेता है। अपनी आत्मा के विषय में अधिक से अधिक जिज्ञासु एवं सचेत रहिये। आप अपनी आत्मा से परिचित होंगे, वाणी सुनेंगे, सच्चा मार्ग निर्देशन पायेंगे, तो अज्ञान से मुक्त होंगे और जीवन में यथार्थ सुख-शान्ति के अधिकारी बनेंगे।

मनुष्य जो काम करता है वह अधिकतर करता अन्तःप्रेरणा से ही है, किन्तु वह अन्तःप्रेरणा अन्तरात्मा की नहीं होती। वह होती है मन की, जो कि स्वभावतः पतन पथगामी है, चंचल, निरंकुश एवं उच्छृंखल मनुष्य के लिए यातना का महामूल है। वह इन्द्रियों द्वारा कार्य रूप में स्फुरित होकर मनुष्य को अन्धकार की ओर ही खींच ले जाता है।

जब तक मनुष्य उच्छृंखल मन की प्रेरणा से गतिशील होता रहता है, तब तक निरन्तर ऐसे मार्ग पर ही चलता रहता है। जिस पर दुःख द्वन्द्वों एवं शोक सन्तापों की कंटकित झाड़ियाँ ही उगी रहती हैं। यथार्थ बात यह है कि मनुष्य अपने अन्तरात्मा की आवाज इसी मन के कोलाहल के कारण नहीं सुन पाता। जहाँ मन का स्वभाव उछल-कूद मचाने और शोर करने का है वहाँ मनुष्य की अन्तरात्मा शान्त एवं सुस्थिर होती है। न तो वह मन की तरह कोलाहल कर पाती है और न उछल-कूद मचा पाती है। अपनी इसी चपलता के कारण ही मन मनुष्य की अन्तरात्मा के आगे बना रहता है और उसे तरह-तरह की अवांछनीय प्रेरणाएँ दिया करता है। आवाज में प्रबलता एवं निर्देश में शासन का भाव रखकर मन मनुष्य को शीघ्र ही अपने अनुकूल प्रभावित कर लेता है, हठपूर्वक उसे अपना आज्ञापालक बना लेता है। जब कि शुद्ध-बुद्ध एवं शान्त आत्मा कभी भी मनुष्य से किसी बात का दुराग्रह नहीं करती।

अन्तरात्मा से जिज्ञासु को चाहिए कि वह मन के कोलाहल की ओर से कान बन्द कर अन्तरात्मा की आवाज सुनने का अभ्यास करे। जिस दिन वह अन्तरात्मा का निर्देश सुनने और उनका पालन करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगेगा, निश्चय ही उस दिन से यथार्थ सुख-शांति का अधिकारी बन जायेगा। जिज्ञासा की प्रबलता से मनुष्य के कान उस तन्मयता को सरलता से सिद्ध कर सकते हैं। जो अन्तरात्मा की आवाज सुनने में सफलतापूर्वक सहायक हो सकती है। आत्मा मनुष्य का सच्चा मित्र है। वह सदैव ही मनुष्य को सत्पथ पर चलने और कुमार्ग से सावधान रहने की चेतावनी देती रहती है; किन्तु खेद है कि मनुष्य मन के कोलाहल में खोकर उसकी आवाज नहीं सुन पाता यदि मनुष्य वास्तव में उसकी आवाज सुनना चाहे तो ध्यान देने से उसी प्रकार सुन सकता है। जिस प्रकार बहुत सी आवाजों के बीच भी उत्सुक शिशु अपनी माँ की आवाज सुनकर पहचान लेता है।

अन्तरात्मा मनुष्य का मित्र है और सदैव ही उसका हित चाहता रहता है तो फिर वह उसके लिए प्रत्यक्ष क्यों नहीं होता, लुका-छिपा क्यों रहता है? यह प्रश्न किसी भी व्यक्ति के मस्तिष्क में उठ सकता है। इसका सीधा सा उत्तर यही है कि आत्मा सदा सर्वदा प्रत्यक्ष ही रहता है; किन्तु यह मनुष्य का ही दृष्टिकोंण है कि वह उसे देख नहीं पाता। सूर्य सदैव प्रत्यक्ष है, पर उसके तथा दृष्टि के बीच में कोई व्यवधान आ जाये, तो सूर्य उसके लिए अप्रत्यक्ष ही है। मनुष्य तथा उसकी आत्मा के बीच मन की प्रधानता का पर्दा पड़ा हुआ है, जिसके कारण प्रत्यक्ष आत्मा भी मनुष्य के लिए अप्रत्यक्ष ही रहती है। यदि मनुष्य इस मन की प्रधानता की उपेक्षा कर सके, तो निश्चय ही उसका अन्तरात्मा उसके लिए प्रकाश के समान ही प्रत्यक्ष हो जाये। वही मनुष्य-जीवन की परम सार्थकता भी है। आत्मा ही परम ज्ञातव्य है, उपास्य है, साध्य है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा वा अरे श्रोतव्यः

आत्मा के उद्धार के लिए शास्त्रों और उपनिषदों में काफी साधन और ज्ञान पड़ा हुआ है; किन्तु साहित्य का स्वाध्याय कर लेना उसका ज्ञान बढ़ाकर उपदेश कर लेने से किसी को साक्षात्कार नहीं हो जाता। उपनिषदकार ऋषि का स्पष्ट निर्देश है–

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो
न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमैवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष
आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्॥ (मुण्डक० ३.२.३)

अर्थात्— यह आत्मा बहुत उपदेश कर लेने से नहीं मिल जाता। बहुत ज्ञान और शास्त्रों के सुन लेने से भी वह प्राप्त नहीं होता। वह आत्मा को वरण करने से ही जाना जा सकता है।

आत्मा सत्य है, शाश्वत और अनित्य है, शक्ति का स्वरूप है। पर जब तक वह सांसारिक— कल्पनाओं से विमुक्त नहीं हो जाती, वह अपने वास्तविक रूप में प्रकट नहीं हो सकती। शास्त्रों का, सत्साहित्य का स्वाध्याय और ज्ञानसंवर्द्धन भी इस कार्य में सहायक है पर केवल ज्ञान की प्राप्ति ही पर्याप्त नहीं है। बुद्धिमान लोग ज्ञान का दुरुपयोग करते हुए भी देखे जाते हैं। ज्ञान के द्वारा यदि आत्म-लाभ सम्भव रहा होता, तो अनेक पाश्चात्य दार्शनिक बहुत ज्ञानवान् हुए हैं— वे सब आत्मज्ञानी रहे होते और यदि इन देशों में थोड़े भी आत्मवान् रहे होते, तो आज उनकी दशा भिन्न ही होती। भौतिक दृष्टि से समृद्ध बनकर भी बुराइयों का जाल फैलाकर यह उपदेशक तब दूसरों के लिए अभिशाप नहीं बनते, वरन् स्वयं भी आध्यात्मिक सुखों का रसास्वादन कर रहे होते।

औरों को उपदेश करने की अपेक्षा अपना उपदेश आप कर लिया जाए, औरों को ज्ञान देने की अपेक्षा स्वयं के ज्ञान को परिपक्व कर लिया जाए, दूसरों को सुधारने की अपेक्षा अपने को सुधार लिया जाए, तो अपना भी भला हो सकता है और दूसरे लोगों को भी कर्मजनित प्रेरणा देकर प्रभावित किया जा सकता है। लोग यह कम देखते हैं कि आप कहते क्या है? उपदेशक की वार्ता का नहीं, उसके व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव अधिक होता हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मज्ञान की परिपक्वता और गुणों के विकास के लिए आत्म सम्बोधन का महत्व है। सच्चे हृदय से आत्मा का उद्बोधन होता रहे, तो मनुष्य अनेकों बुराइयों से बचा रह सकता है और आत्म-कल्याण के मार्ग में निष्ठापूर्वक आरूढ़ बना रह सकता है। ईश्वर-भक्ति भी दरअसल आत्म-उद्बोधन का विकास रूप ही है, जो विचार की अपेक्षा अधिक सरल है। किसी भी विषय को लेकर उसकी गहराई में तन्मय हो जाना और नए-नए तथ्यों की खोज कर लेना सामान्य व्यक्तियों के लिए बहुत कठिन है। कोई थोड़े ही ज्ञानवान् निष्ठावान् व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो विचार-रत रहकर किन्हीं सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर पाते हैं। प्रारम्भिक अवस्था में विचार आत्म-निर्माण में भी बड़ा सहायक होता है; पर जब किसी के लिए यह स्थिति सम्भव न हो, तो उसे भावनाओं का आश्रय तो लेना चाहिए। परमात्मा के गुणों का रूप, आकृति, दया करुणा, उदारता और रक्षा आदि के कार्यों का अपने आप मनन, भजन अथवा कीर्तन करना ही भावना का प्रतीक है। अपेक्षाकृत यह अधिक सरल प्रक्रिया है और इस मार्ग द्वारा भी अपने आपको सत्य से उस समय तक जोड़े रखा जा सकता है, जब तक सत्य सिद्ध न हो जाए अथवा फिर कभी बुराइयों की ओर आकृष्ट हो जाने का भय शेष न रहे।

ईश्वर की प्राप्ति के लिए जो महत्त्व ईश्वर को उद्बोधन करने का है। आत्मज्ञान के मुमुक्षुओं के लिए आत्मा के उद्बोधन का भी वही महत्त्व है। जिस प्रकार भगवान् का भक्त कह सकता है—ईश्वर! तू सर्वव्यापक है, विश्वनियन्ता और सबको धारण करने वाला तू ही है, तूने ही इस सृष्टि की, रचना की, आकाश बनाया। समुद्र, पर्वत, नदियाँ, वृक्ष, फल, फूल और तरह-तरह के जीव बनाए हैं। तू परम दयालु है पर ममता रहित है, तेरे वश में सम्पूर्ण लोकपाल और दिक्पाल हैं; फिर भी तू अहङ्कार रहित है। इस प्रकार की भावनाएँ भक्त की भावनाओं को जीवन प्रदान करती हैं, उसकी ईश्वर निष्ठा बढ़ती है और वह बुरे विचारों से बचता हुआ निरन्तर कल्याण की ओर अग्रसर होता रहता है।

येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम।

महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी समस्त सम्पत्ति को दोनों पत्नियों में बराबर बाँटकर गृह त्याग के लिए उद्यत हुए। मैत्रेयी को सन्तोष नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुआ और वह आखिर पूछ ही बैठी "भगवन् ! क्या मैं इस सबको लेकर जीवन-मुक्ति का लाभ प्राप्त कर सकूँगी ?" "क्या मैं मर जाऊँगी ? आत्मसंतोष प्राप्त कर सकूँगी ?" महर्षि ने अपने चिन्तन का क्रम तोड़ते हुए कहा—"नहीं ऐसा नहीं हो सकेगा। साधन-सुविधा सम्पन्न सुखी जीवन जैसा तुम्हारा अब तक रहा, इसी तरह आगे भी चलता रहेगा। अन्य सांसारिक लोगों की तरह ही तुम भी अपना जीवन सुख-सुविधा के साथ बिता सकोगी।"

मैत्रेयी का असन्तोष दूर नहीं हुआ और वे बोलीं, "**येनाहं नामृतास्याम् किमहं तेन कुर्याम्।**" "जिससे मुझे अमृतत्व प्राप्त न हो, उसे लेकर मैं क्या करूँगी ? देव ! मुझे यह सुख-सुविधा सम्पन्न सांसारिक जीवन नहीं चाहिए।" (बृह० २.४.३)

"तो फिर तुम्हें क्या चाहिए, मैत्रैयी ?" महर्षि ने पूछा और मैत्रेयी की आँखों से अश्रुधारा बह निकली। उसका हृदय सम्पूर्ण भाव से उमड़ पड़ा उस दिन। मैत्रेयी ने महर्षि के चरणों में सिर झुकाते हुए कहा:—

"**असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय। आविरावीर्म एधि रुद्र यत्ते दक्षिण मुखं तेन मां पाहि नित्यम्।**"

"हे प्रभो ! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले जाओ, अन्धकार से प्रकाश ओर, मृत्यु से अमृत्यु की ओर गति प्रदान करो। हे देव ! हे प्रकाश ! आप चिर प्रकाश बनकर मेरे जीवन में प्रकाशित हो उठें। रुद्र बनकर मेरे समस्त पाप रूपी अन्धकार का नाश कर दें। अपने प्रेम स्वरूप आनन्दमय दर्शन देकर मुझे कृतार्थ करें, जिसकी छाया में मैं चिरकाल तक परित्राण प्राप्त करूँ।"

मैत्रेयी ने महर्षि के सान्निध्य में सुख-समृद्धि सम्पन्नता का जीवन बिताया था; किन्तु उसके अन्तर का यह प्रश्न अभी तक अधूरा था। उसका समाधान अभी तक नहीं हो पाया था।

हम जीवन भर नाना सम्पत्ति, ऐश्वर्य, वैभव एकत्र करते हैं। आश्रय, धन, नाना पदार्थ बहुमूल्य सामग्री जुटाते हैं और अन्तस् में स्थित मैत्रेयी को सौंपते हुए कहते हैं "लो ! इससे तुम्हें प्रसन्नता होगी, आनन्द

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिलेगा।'' ''अनेकानेक सामग्री हम जुटाते हैं किन्तु, अन्तस् में बैठी मैत्रेयी कहती ही रहती है **येनाहं नामृता स्यांम् किमहं तेन कुर्याम।''** इन सब सामग्रियों में जीवन के शाश्वत प्रश्न का समाधान नहीं मिलता और निरन्तर छटपटाती रहती है। उस महत्त्वपूर्ण तथ्य की प्राप्ति के लिए जो उसे सत्य, ज्योतिर्मय अमृतत्व की प्राप्ति करा सके, सब ओर से उसे परित्राण देकर आनन्दमय बना सके।

मैत्रेयी चाहती थी उस परम तत्त्व का साक्षात्कार, एकानुभूति, नित्य दर्शन जो सत्य, ज्योतिर्मय, स्वरूप है, जो उसके जीवन का चिर प्रकाश बने। रुद्र बनकर उसके समस्त पाप-तापों को नष्ट करदे और उसे परित्राण देकर निर्भय बना दे।

मैत्रेयी ने अपने अनुभव की कसौटी पर जान लिया था कि संसार और इसके सकल पदार्थ, सम्बन्ध, नाते-रिश्ते मरणशील हैं। इनका पर्यवसान अन्धकार और असत्य में ही होता है, दैहिक, दैविक, भौतिक पाप-तापों की पीड़ा जीव को सदा ही अशान्त, भयभीत बनाए रखती है।

मनुष्य नाना पदार्थ, उपकरणादि संग्रह करता है। धन-सम्पत्ति जुटाता है। बड़े-बड़े महल बनाता, देह को नाना भाँति सँजोता-सँवारता है। रातदिन इन्हीं को आधार बनाकर जुटे रहने से इनके प्रति मनुष्य में एक तरह की आसक्ति एवं ममता उत्पन्न हो जाती है। धीरे-धीरे यह अभ्यास इतना प्रगाढ़ हो जाता है कि मनुष्य इन्हीं उपकरणों, सामग्री, सम्बन्धों को सब कुछ मान इन्हीं का अवलम्बन सम्पत्ति लेकर चलने लगता है; किन्तु संसार के नियम के अनुसार ये मिट्टी के घरौंदे क्षण-क्षण में गिरते-पड़ते रहते हैं। परिवर्तित होते रहते हैं। संसार और पदार्थ बनते-बिगड़ते रहते हैं। कोई भी स्थिर नहीं रहता। मनुष्य का शरीर ही वृक्ष के पत्ते की तरह एक दिन झड़ जाता है। वह भी स्थिर नहीं रहता। जो कुछ भी दिखाई देता है वह सब ही तो असत्य है मरण-धर्मा है अन्धकारमय है।

मनुष्य इनका अवलम्बन लेकर क्षण-क्षण इनके वियोग, रूपान्तर परिवर्तन के साथ-साथ ही मृत्यु का अनुभव करता है। जिसे सत्य मान लिया गया था, वे तो स्वप्न की तरह असत्य सिद्ध होते हैं। कृत्रिम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकाश के बुझ जाने पर अन्धकार के सिवाय कुछ भी नहीं रहता। भय आशङ्का, क्लेश, पाप, ताप उसे क्षण भर भी तो स्थिर नहीं रहने देते। आवर्तनशील श्रम खलता ही रहता है और इसका कोई अन्त नहीं होता।

इसीलिए मैत्रेयी को इन सब वस्तु, पदार्थ, सम्पत्ति, समृद्धि के परे किसी ऐसी वस्तु की अभिलाषा थी जो इस तरह के मरणधर्म, प्रत्यावर्तन स्वप्रवत असत्यता परिणाम में अन्धकार से सर्वथा मुक्त हो। जिसे प्राप्त करने के बाद फिर छोड़ने या बदलने का कोई प्रश्न ही उपस्थित न हो। जो मृत्यु से अतीत, सत्य, ज्योतिर्मय, दिव्यरूप हो। ऐसा अमृतत्व चाहती थी मैत्रेयी।

लेकिन हम शक्ति और युक्ति द्वारा संसार के पदार्थों में उसे ढूँढ़ते हैं नाप जोख करते हैं। नाना साज-सामान एकत्र करते हैं और अन्तस् में विराजमान मैत्रेयी से कहते हैं "लो देवि! इन्हें ग्रहण करो और सुखपूर्वक जीवन बिताओ।" किन्तु वह हर बार अपना असन्तोष प्रकट करते हुए पूछती है "क्या इससे मुझे अमृतत्त्व की प्राप्ति हो सकेगी?"

"नहीं?" तो फिर मैं जो चाहती हूँ वह तो यह नहीं है। "**येनाहं-नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम**" जिससे मुझे अमृतस्वरूप की उपलब्धि न हो, तो उसे लेकर मैं क्या करूँगी? और वह नित्य निरन्तर ही अश्रु भरे नेत्रों और व्याकुल हृदय से प्रार्थना करती है—

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय। आविरावीर्म एधि रुद्र यत्ते दक्षिण मुखं तेन मां पाहि नित्यम्।"

"हे चिरन्तन सत्ता! मेरे अन्तस् और बाह्य में सर्वत्र हे विराजमान सत्य! मुझे सत्य की सीमा से बाहर निकाल कर अपने में मिला लो। जग के असत्य पदों को हटाकर सत्य स्वरूप भवन में ले चलो। जहाँ "आप हैं" आपके सिवा कुछ भी नहीं है।

"**ज्योतिषां यज्ज्योति**" सर्व लोगों में ज्योतियों की भी परम ज्योति! कोटि-कोटि सूर्य सम आपकी परम ज्योति व्याप्त है। हे ज्योतिर्मय! अपने पावन स्पर्श से मुझे भी ज्योतिर्मय बना दें, जिससे अन्धकार के समस्त परिवेष्टनों से मुक्त होकर मैं भी ज्योतिर्मय बनूँ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हे अमृत! रस! परमानन्द के धाम! सर्वत्र आप ही अजर-अमर अविनाशी बनकर व्याप्त है। यह जगत् आप में ही धारण पोषण विनाश प्राप्त करता है; किन्तु आप सदा-सदा गम्भीर स्तब्ध एक रस बने रहते हैं। आपकी कोई रूप सीमा आयु नहीं। अपने इस अमृत स्वरूप में मिलाकर मुझे भी अमर्त्य बनाएँ।''

''हे प्रकाश! मुझे अपने प्रकाश से जगमग-जगमग कर दो। अपनेपन, अहङ्कार राग, आसक्ति के समस्त अन्धकार का उच्छेद करके पूर्ण रूपेण प्रकाशमय कर दो।''

हे रुद्र! अपने प्रचण्ड ताप से मेरे समस्त पापों को भस्मीभूत कर दो। मेरे अन्तस् एवं बाह्य जीवन में जो भी दुश्चेष्टा, दुर्भावना, दुष्कर्म, आदि पाप हों उन्हें अपने रुद्र ताप से नष्ट कर दें, तब आपके आलोक-प्रकाश की निर्विकारी सत्ता ही मुझ में शेष रहेगी। हे प्रभो! आप अपने प्रसन्न मधुर आनन्दमय दर्शन देकर मुझे कृतार्थ करें। हे देव! तब मैं आपका ही निवास बनकर सब ओर से परित्राण पा सकूँगी।''

अन्तस् में विराजमान मैत्रेयी की अन्तरात्मा की इस प्रार्थना को हम एकाग्रता के साथ सुनें। उसके स्वरों में स्वर मिलाकर गाएँ। प्रबल जिज्ञासा, उत्कृष्ट इच्छा, अश्रुपूर्ण नेत्रों के साथ ही हमारी यह प्रार्थना किसी तरह की सौदेबाजी, लेनदेन या सँजोकर रखने की बात न हो। संसार के बीच में विचरण करते हुए हम उसी को ग्रहण करें, जो हमारी आत्मा की चिर इच्छा को पूर्ण करे। उसे सत्य अमृत-ज्योति की प्राप्ति कराएँ। जो हमें अमर्त्य प्रदान न करें, उसे छोड़ते जायें।

''**येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम्**'' यह हमारा जीवन मन्त्र बन जाय। मैत्रेयी की आकुलता देखकर आत्म-तत्त्व का विश्लेषण करते हुए याज्ञवल्क्य ने भी यही कहा था—

''**आत्मा वा अरे मैत्रेयि! द्रष्टव्यः श्रोतव्यः मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः**''—अरी मैत्रेयी! आत्मा ही देखने योग्य सुनने योग्य—मनन करने योग्य और निदिध्यासन के योग्य है। (बृहदारण्यक० ४.५.६)

उस आत्मा की आवाज सुनना हम सबका कर्त्तव्य है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पुकार सुनें और उसे सार्थक करें-

पता नहीं आपने कभी ध्यान दिया या नहीं- अन्तस् में जब तब एक आवाज उठा करती है कि—''अरे तू यह क्या कर रहा है ? क्या इसीलिए तुझे यह सर्व सम्पन्न शरीर मिला है ? उठ अपना स्वरूप, अपनी शक्ति पहचान और उन अच्छे कर्मों को कर, जिनकी तुझसे अपेक्षा की जा रही है।''

यह पुकार करने वाला और कोई नहीं होता। परमात्मा ही होता है जो आत्मा रूप में सबके अन्दर विद्यमान रहता है। अब जो इस आवाज का आदर करते और जाग उठते हैं, वे संसार में श्रेयस्कर कार्य कर दिखलाते हैं, उनका ईश्वर उनकी पूरी सहायता करता है।

यह आवाज उस समय ही अधिकतर उठा करती है जब मनुष्य या तो स्वार्थ एवं संकीर्णता की परिसीमा पार करने लगता है अथवा वह काम करता है, जो उसे नहीं करना चाहिये। अपनी क्षमताओं की तुलना में छोटा काम करते हुए जब कोई शक्तियों का अपमान करता है, तब भी यह आन्तरिक आवाज टोका करती है।

इसका एक मात्र आशय यही होता है कि ऐ मेरे अंश-मनुष्य, तू ऐसा काम न कर, जिससे कि मुझे लज्जा अथवा आत्म ग्लानि हो और न ही वे छोटे-मोटे काम कर, क्योंकि तू अधिक ऊँचे काम करने के लिए नियुक्त किया गया है। ये निम्न अथवा हेय कार्य तेरी क्षमता के अनुरूप नहीं हैं।

जो आस्तिक एवं आत्मविश्वासी इस परमात्मा की पुकार को सुन कर प्रेरित होते हैं, अपनी निहित शक्तियों का आह्वान करते और कटिबद्ध होकर दृढ़तापूर्वक कर्त्तव्यों में तत्पर हो जाते हैं, वे निश्चय ही अपनी वर्तमान स्थिति से बहुत आगे बढ़कर चाँद सितारों की तरह चमक उठते हैं, फिर उनका अभियान आर्थिक हो अथवा आध्यात्मिक। इस परमात्मा की पुकार का तकाजा है कि जो जहाँ पर है, वहाँ पर न रहे। उससे आगे बढ़े और निरन्तर आगे बढ़ता ही जाये। मानवीय विकास एवं उन्नति की न तो कोई सीमा है और न विराम।

संसार के जितने भी महापुरुष आज जन साधारण के प्रेरणा केन्द्र एवं प्रकाश स्तम्भ बने हुए हैं उन्होंने इस आन्तरिक पुकार की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कभी उपेक्षा नहीं की। उन्होंने आवाज सुनी, जागे और तत्काल आयोजन में लग गये, आगे की ओर चल पड़े। ऐसे जाग्रतिवान महान् पुरुषों में से अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट जार्ज वाशिंगटन भी थे।

जार्ज वाशिंगटन अमेरिका के एक साधारण किसान के पुत्र थे। उनके पिता बहुत ही साधारण स्थिति के व्यक्ति थे। बेटे को हल, फाल, जमीन तथा कुदाल आदि देने के अतिरिक्त उच्च शिक्षा जैसी कोई चीज दे सकने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। निदान वयस्क होने पर उन्होंने जार्ज वाशिंगटन को ये चीजें सौंप दीं।

वाशिंगटन भी तो प्रारम्भ से लेकर अब तक उसी वातावरण में पला था। उसकी कल्पना भी उन चीजों, उन कार्यों और उस वातावरण से आगे कैसे जा सकती थी? खुशी-खुशी उसने हल लिया और पिता की तरह सामान्य रूप से खेती-बारी में लग गया।

वाशिंगटन किसान बन गया; किन्तु उसकी आत्मा उस कार्य में तादात्म्य अनुभव नहीं कर रही थी। इसलिए नहीं कि खेती कोई निकृष्ट कार्य था, बल्कि इस अभ्यास के कारण कि वह उससे भी ऊँचा कोई काम करें जिससे राष्ट्र समाज अथवा संसार का अधिक हित सम्पादित हो सके।

उसका अभ्यास प्रकाश बना और वह प्रकाश एक दिन जब वह हल चला रहा था, आवाज बनकर उसके अन्तराल में गूँज उठा—"वाशिंगटन क्या कह रहा है?" यह खेती का काम तो कोई दूसरा भी कर लेगा। तू जिस उद्देश्य के लिए आया है, उसे याद कर। देख, देश की वेदी तुझे अपने उद्धार के लिए आह्वान कर रही है। हल रुक गया और वाशिंगटन अपने उद्देश्य पथ पर अग्रसर हो उठा। महापुरुषत्व और मानवी महिमा इसी संदेहरहित आत्मविश्वास, आस्था, आकस्मिकता एवं साहस के सुन्दर शिवालय में निवास करती है।

वाशिंगटन ने आवाज सुनी, जागा और अपने से कह उठा-अवश्य ही मैं बड़ा काम करने के लिए इस संसार में आया हूँ। मैं उसे करूँगा और वह बड़ा काम है, देश को विदेशियों की दासता से मुक्त कराना है। संसार का कोई अवरोध जीवन की कोई भी कठिनाई, पथ का कोई संकट और साधनों का कोई भी अभाव मुझे मेरे अभीष्ट लक्ष्य से विचलित नहीं कर सकता। उसका संकल्प बलिदान बनकर उसके रोम-रोम में तद्रूप हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयत्न, अध्ययन एवं विचार से प्रारम्भ हुआ और तब तक चलता रहा, जब तक पूर्ण एवं परिपक्व होकर क्रियात्मक प्रेरणा में परिणत नहीं हो गया।

अपने इस विकास एवं निर्माण में वाशिंगटन को कितने प्रकार की कठिनाइयों से जूझना पड़ा होगा, इसको बतलाया नहीं जा सकता। केवल इस बात से एक धुँधला-सा आभास ही पाया जा सकता है कि एक दीन हीन किसान के अनपढ़ पुत्र की स्थिति से राष्ट्रोद्धार की महानता के दुरूह पथ को पार करना, अपने अध्यवसाय के बल पर संस्कारों एवं कुप्रवृत्तियों को जीतकर जीवन में ही पुनर्जीवन पा लेने से कम कठिन, साथ ही कम श्रेयस्कर नहीं है।

किन्तु जिन्हें कुछ करना ही है उनके लिए कष्ट, संकट, श्रम, श्रांति अथवा विश्रांति का क्या अर्थ? वे यदि कुछ चाहते हैं तो काम-काम और निःस्वार्थ काम। वाशिंगटन ने समागत प्रतिकूलताओं का भी सहर्ष स्वागत किया और एक दिन आया जब उन्होंने राष्ट्र के दासता पाश काट फेके और राष्ट्र ने उसकी सेवाओं के मूल्याँकन के रूप में, उसके पास जो राष्ट्रपति का सर्वोच्च सम्मान था। वह दिया और आज भी सैकड़ों साल बीत जाने पर उसके नाम उसकी प्रतिमाओं और उनके स्मारकों को वही सम्मान दिया जाता है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन का एक लक्ष्य होता है। वह यह कि वह जो कुछ है, वही नहीं रहता है। उसे जितना भी हो सके, आगे बढ़ना और चढ़ना है। अपनी वर्तमान परिधि से निकल कर अधिक विस्तृत सीमाओं में प्रवेश करना है। एक कक्षा के बाद दूसरी कक्षा पाना ही है। एक स्तर से उठकर दूसरा स्तर पकड़ना ही है और अन्त में उसे यह लाभ करना ही है कि उसने जीवन को कीड़े-मकोड़ों की तरह एक गढ़े में पड़े-पड़े नष्ट नहीं किया है। उसने उन्नति एवं विकास किया है। आगे बढ़कर चेतन होने का प्रमाण दिया है और अपने इस विश्वास को प्रकट कर दिया है कि यह सुरदुर्लभ मानव जीवन तृष्णा एवं वासनाओं की वेदी पर वध करने के लिए नहीं, बल्कि किसी सदुद्देश्य उच्च आदर्श की पवित्र वेदिका पर फूल की तरह उत्सर्ग कर देने के लिए है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिसे अपनी निकृष्ट नैतिक स्थिति, जीवन का निम्न स्तर काँटे की तरह नहीं चुभता, जिसकी हीनावस्था उसे तिरस्कृत नहीं करती। जो इस लाँछन एवं अपमान को यों ही सहन कर लेता है, उसे यदि मृत मान लिया जाय, तो कोई दोष नहीं। जिसमें जरा भी जीवन है, थोड़ा भी मनुष्यत्व है, वह जीवन के इस अपमान, इस लाँछना को सहन नहीं कर सकता। उसके हृदय में वेदना होगी, आत्मग्लानि होगी और परिस्थितियों को धिक्कार पुरुषार्थ के लिए ललकार कर उठ खड़ा होगा और अडिग संकल्प के साथ सब कुछ बदल कर रख देगा। संसार में ऐसे भी महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने असम्भव माने जाने वाले परिवर्तनों को घटित कर के दिखा दिया और उनमें से एक महाकवि कालिदास भी थे।

लोक प्रसिद्ध है कि कालिदास एक वज्र मूर्ख लकड़हारे थे। इतने मूर्ख कि जिस डाल पर बैठते थे, उसी को काटते हुए कई बार पथिकों द्वारा उतारे गये। इतने मूर्ख और इतने अज्ञानी कि 'भेड़' कहे और 'भे' कह कर चिढ़ाये जाते। न माँ न बाप न कोई भाई बन्धु। यों ही विनोददायक होने से रोटी-लँगोटी मिल जाती थी। अब ऐसे प्रचण्ड मूर्ख के विषय में क्या कभी यह कल्पना की जा सकती थी कि वह एक दिन प्रकांड पण्डित बन कर संसार का कवि-शिरोमणि बनेगा; किन्तु कालिदास ने संसार में न केवल इस कल्पना को ही जन्म दिया, वरन् उसे अतिरूप में चरितार्थ करके दिखला दिया। लगन और पुरुषार्थ की यही महिमा है।

तत्कालीन विदुषी राजकुमारी विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ एवं पांडित्य में पराजित होकर, चिढ़े हुए पण्डित लोग दैवात् विद्योत्तमा का विवाह छल से कालिदास से करा देने में सफल हो गये।

कालिदास और विद्योत्तमा का परिचय हुआ और प्रथम क्षण में ही उस विदुषी ने मूर्खराज कालिदास को पहचान लिया। उसने 'हाय' करके कपाल पर हाथ मारा और रोते हुए यह कहकर कालिदास को अपने कक्ष से बाहर ढकेल दिया कि-अपने से महान् पति की आकांक्षा रखने वाली मैं तुम महामूर्ख को पति स्वीकार कर विद्या को अपमानित और अविद्या को आदृत नहीं कर सकती। चला जा यहाँ से। मेरे साथ छल किया गया है।

कालिदास को धक्का मिला और उसकी आत्मा में एक झटका लगा। आत्म-विभोर कालिदास चौंक कर सहसा जाग उठे। उनकी आत्मा में अचेत पड़े मनुष्य की मूर्छा टूट गयी। उनका अपमान हुआ,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसकी पीड़ा तो उनके प्राणों तक में कसक ही उठी; किन्तु उससे भी अधिक वेदना विद्योत्तमा के उन आँसुओं को देखकर हुई जिनके पीछे एक उज्ज्वल एवं उच्च दाम्पत्य जीवन की आकांक्षा तड़प रही थी।

जागरण हो चुका था। कालिदास सोच सके—सम्भव है यह भारतीय ललना दुबारा विवाह न करे और यों ही इतने महान् एवं मूल्यवान् जीवन को सन्ताप एवं पश्चात्ताप में जला कर नष्ट कर डाले। समाज की इतनी बड़ी क्षति केवल इसलिए हो सकती है कि मैं अशिक्षित एवं असंस्कृत हूँ। कितना निसर्ग सुख हो, यदि मैं अपने को इसके योग्य बना सकूँ। विचार आते ही अन्तराल से आवाज आयी क्यों नहीं पुरुषार्थ एवं संकल्प बल से क्या नहीं हो सकता!' कालिदास चले गये और विद्योत्तमा आँखों में आँसू लिए बैठी रही।

और फिर चार-छः, दस-बारह अनेकानेक वर्षों तक कालिदास का सम्बन्ध संसार की हर बात से टूट कर अध्ययन से जुड़ गया। दिन और रात सन्ध्या और प्रातः कब आये और कब गए कुछ पता नहीं। इन दशाब्दियों तक यदि कालिदास को कुछ ज्ञात था तो केवल अपनी एकाग्रता और अध्ययन।

कालिदास ने अध्यवसाय को तपस्या की सीमा में पहुँचा कर जो कुछ पाया वह लेकर चल दिये। विद्योत्तमा अपने कक्ष में वही वेदना लिए बैठी थी कि सहसा उसने दरवाजे पर थाप के साथ शुद्ध एवं परिमार्जित संस्कृत में सुना—"प्रियतमे! द्वारकपाटं देहि।" वह उठी द्वार खोला—देखा—कौन? मैं महामूर्ख कालिदास! कालिदास मुस्करा उठे। विद्योत्तमा हर्ष विह्वल हो उठी। अब वह मूर्ख कालिदास की पत्नी नहीं महाकवि कालिदास की प्रेरणादायिनी थी। दोनों के उस पुनर्मिलन ने कालिदास की साधना और विद्योत्तमा की वेदना सफल एवं सार्थक बना दी।

यह है संकल्पपूर्ण पुरुषार्थ एवं लगन का चमत्कार। जब दीन से दीन और मूर्ख से मूर्ख होने पर भी संसार में लोगों ने सर्वोच्च स्थितियों पर पदार्पण कर पुरुषार्थ की महिमा को प्रकट कर दिया, तब कोई कारण नहीं कि हम आप कोई भी अपनी वर्तमान स्थिति से आगे बढ़कर श्रेय प्राप्त नहीं कर सकते। आवश्यकता है आत्मा की पुकार सुनने और उसकी शक्ति पहचानने की।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मज्ञान की आवश्यकता

आत्मा को क्यों खोजना चाहिए और उसकी ही जिज्ञासा क्यों करनी चाहिए? इसका उत्तर यही है कि संसार का वास्तविक तत्त्व आत्मा ही है। जो जरा-मरण से रहित शोक से मुक्त नित्य और अविनाशी है। उसका ज्ञान हो जाने से मनुष्य उसी की भाँति ही भय, शोक, चिन्ता और मरण धर्म से मुक्त हो जाता है अजर अमर होकर संसार के लोगों एवं अनुभवों से ऊपर उठकर चिर अविनाशी पद प्राप्त कर लेता है। इस नाशवान् मानव को इससे बड़ी और इससे ऊँची उपलब्धि अन्य क्या हो सकती है?

मनुष्य एक ऐसा आनन्द प्राप्त करना चाहता है, जो सत्य, अपरिवर्तनशील और अविनाशी हो। संसार के क्षणभंगुर सुखों का उपभोग करने से उसकी यह प्यास पूरी नहीं होती; बल्कि इन उपभोगों से उसकी प्यास और भी बढ़ जाती है। उसे अन्त में अशान्ति और असन्तोष का भागी बनना पड़ता है। इन्हीं नश्वर और मिथ्या भोगों में आनन्द की खोज करता-करता वह जरा को प्राप्त करता है और फिर मृत्यु को। सारा बहुमूल्य जीवन यों ही व्यर्थ में चला जाता है। इसी अवधि में वाँछित आनन्द की निधि रूप यदि आत्मा की खोज कर ली जाय, तब न तो जरा का भय रहे और न मृत्यु का। मनुष्य जीवन में भी उस शाश्वत आनन्द को पाता रहे और उसके बाद तो वह परमानन्दस्वरूप ही हो जाये।

हम सब जीवन में नाना प्रकार की सम्पत्ति, नाना प्रकार के पदार्थ ऐश्वर्य, साधन उपकरण तथा वैभव आदि एकत्र करते हैं। इस संग्रह से निश्चय होता है कि यह पुरुषार्थ यों ही किसी पागलपन से प्रेरित होकर नहीं किया जाता और न यह सब संस्कार अथवा अभ्यासवश ही किया जाता है, इसके पीछे एक उद्देश्य एक मन्तव्य रहता है। वह होता है आनन्द की खोज। हम सबको यह भ्रम रहता है कि यदि हम किसी भाँति वैभवशाली बन जायें—हमारे पास धन-सम्पत्ति की बहुतायत हो जाये, तो हम अवश्य सुखी हो जायें- हमारे लिये आनन्द की कमी न रहे, किन्तु क्या हमारा यह उद्देश्य पूरा हो पाता है? नहीं, निश्चित रूप से नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यदि धन-सम्पत्ति और वैभव-विभूति से ही आनन्द के उद्देश्य की पूर्ति हो सकती, तो इस विशाल संसार में न जाने कितने धन-कुबेर पड़े हैं। ऐसे-ऐसे धनवान् इस धराधाम पर मौजूद हैं जिनके धन-वैभव की कोई गणना नहीं है। जिनकी नित्य प्रति करोड़ों की आय है और जिनका आर्थिक साम्राज्य देश-देशान्तरों में फैला पड़ा है। वे सभी सुखी और सन्तुष्ट होने चाहिए थे; पर देखने में ऐसा आता है कि वे भी अन्य जनसाधारण की भाँति ही आनन्द के लिये लालायित रहते हैं। उस विपुल वैभव के बीच भी रोते कलपते और शोक मनाते दृष्टिगोचर होते हैं।

तथापि, इस निरर्थकता को देख-सुनकर अनुभव करने के बाद भी मनुष्य इन्हीं वैभवों की ओर ही दौड़ता रहता है। अपने जीवन की लगभग सारी अवधि इन्हीं वञ्चनाओं की प्राप्ति में लगा देता है। इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि रात-दिन इन्हीं को लक्ष्य बनाकर जुटे रहने से, इन्हीं के बीच रहने और इन्हीं का चिन्तन-व्यवहार करते रहने से इनके साथ मनुष्य की आसक्ति और ममता का भाव जुड़ जाता है। धीरे-धीरे यह अभ्यास इतना गूढ़ हो जाता है कि जीवन का एक अङ्ग ही बन जाता है।

मनुष्य इन्हीं उपकरणों, साधनों और सामग्रियों को ही सर्वस्व मान बैठता है। युग-युग का, जन्म-जन्म का अभ्यास छूटना सरल नहीं होता। वह स्वभाव बन जाता है और तब मनुष्य उसकी निस्सारता और हानियों को जानता-मानता हुआ भी उन्हीं की ओर उत्सुक बना रहता है। दूसरी बात यह कि इस सबसे परे जो अविनाशी और चिदानन्दमय आत्म-तत्त्व है उससे उसका परिचय नहीं होता। जिसको वह जानता ही नहीं, उसके प्रति आकर्षित होने का प्रश्न ही नहीं। आकर्षण तो उसी के प्रति होता है जिसका ज्ञान होता है और जिससे पहचान होती है। सांसारिक वैभव और भोगों से परे भी एक ऐसा सत्य तत्त्व जिसमें आनन्द का निवास माना गया है-यदि मनुष्य को यह ठीक-ठीक पता चल जाये, तो वह आनन्द, प्राप्ति के लिए उसकी ओर भी आकर्षित हो। दो चीजें सामने होने पर तो कोई एक को छोड़कर दूसरी या एक के साथ अन्य का भी चुनाव कर सकता है और तब जो उसके लिये अधिक उपयोगी हो, उसे ही ग्रहण कर दूसरी को छोड़ सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

केवल एक सांसारिक वैभव के सामने होने और सम्भव मानने के कारण मनुष्य उन्हीं को दौड़-दौड़ कर पकड़ता है और उन्हीं में आनन्द की खोज करने का प्रयत्न करता है। असफल होता है; लेकिन फिर उन्हीं को पकड़ता और फिर असफल होता है। आत्मा का ज्ञान न होने से यह प्रक्रिया उसके लिए एक विवशता बनी हुई है यदि आत्मा की प्राप्ति हो जाये, तो निश्चय ही उसके इस स्वभाव में परिवर्तन हो जाय और तब उसका उद्देश्य भी पूरा हो जाये।

नश्वरता संसार का नियम है। इसकी कोई चीज भी स्थिर अथवा अविनाशी नहीं है। इस नियम के अनुसार उपार्जित किया हुआ वैभव भी सन्ध्या की छाया की तरह नष्ट हो जाता है। आज है कल नहीं रहता और यदि किसी के पास युक्ति के आधार पर कुछ अधिक समय तक बना भी रहता है, तो उसके नाश हो जाने का भय दुःखी बनाता रहता है। भोग-विलास, जिनमें डूब कर मनुष्य बड़ा आनन्द मनाता है, शीघ्र ही मनुष्य को नष्ट कर स्वयं भी नष्ट हो जाते हैं।

यौवन के ढलते और जरा के आते ही संसार के भोग दुर्बल हो जाते हैं। उनका झूठा आनन्द भी ले सकने योग्य मनुष्य नहीं रह पाता। तब उनका ध्यान शैल की तरह सालता है। यदि मनुष्य प्रारम्भ में ही इनको निस्सार मानकर इनका व्यसन न पाल ले, इनसे आसक्ति न जोड़ ले, तो बहुत हद तक इस मानसिक दुःख से बच सकता है; पर अज्ञान के कारण वह स्वभावतः ऐसा कर नहीं पाता।

मनुष्य आनन्द के लिये सांसारिक सम्पदाओं का आधार लेता है उनमें आनन्द तो क्या पाता है? उलटे उनके वियोग, अस्थिरता और परिवर्तनशीलता के साथ उनके विनाश की सम्भावना से बेचैन और दुःखी रहता है। सारा जीवन इन जाने वाले पदार्थों को रोकने में ही समाप्त कर देता है और एक दिन स्वयं भी शरीर छोड़कर अनजान दिशा में चला जाता है। जिन पदार्थों को भोला मनुष्य सत्य समझ कर पकड़ता है, वे सब स्वप्न की तरह असत्य सिद्ध होते हैं। सांसारिक भोगों में दीखने वाला आनन्द कृत्रिम प्रकाश की तरह है और तब जीवन में विषाद का घना अन्धकार छा जाता है, जिसमें भटकते हुए ठोकरें खाने के सिवाय कुछ भी शेष नहीं रह जाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यही कारण है कि मनीषियों ने सांसारिक सिद्धियों से परे अविनाशी एवं अपरिवर्तन आनन्द की निधान आत्मा को खोजने और पाने के महत्त्व पर अपना मत दिया है। आत्मा सत्य है, नित्य है, ज्योति स्वरूप और आनन्दमय है। उसको पा लेने पर कुछ पाना शेष नहीं रह जाता और जान लेने पर कुछ जानना नहीं रहता। मनुष्य के पुरुषार्थ की सार्थकता सांसारिक सुखों के उपकरण और उपादान संचय करने में नहीं है; बल्कि आत्मा को प्राप्त करने के प्रयत्न में है।

यह जड़ चेतनमय जितना भी जगत् दृष्टिगोचर होता है, इसका अपना अस्तित्व कुछ भी नहीं है। आत्मा के आधार पर ही इसका अस्तित्व निर्भर है, आत्मा ही मानव—जीवन का चरम सत्य है। आत्मा के प्रकाश में ही बाह्य संसार और मानव-जीवन का अस्तित्व प्रतिभासित होता है। आत्मा के पटल पर ही संसार और दृश्य जीवन का छाया नाटक बनता-बिगड़ता रहता है। संसार और कुछ भी तो नहीं, केवल आत्मा की अभिव्यक्ति और उसका ही विस्तार है। आत्मा एक चिरन्तन सत्य है। इससे प्रथक् जो कुछ है वह असत्य है, भ्रमपूर्ण है और अग्राह्य है। उपनिषदों ने जिस 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय'-का उद्घोष किया है उसका संकेत सांसारिकता से ऊपर उठ कर आत्मा की ओर ही अभियान करने का है; क्योंकि आत्मा ही ज्योति रूप है, शिव रूप है और वही अमृत रूप भी है। निश्चय ही मनुष्य को ऐसी कल्याणकारी आत्मा को पाने का प्रयत्न करते ही रहना चाहिये।

आत्मा जिज्ञासा से रहित जीवन भार स्वरूप ही बना रहता है। आत्म जिज्ञासा से रहित मनुष्य को भय की कल्पनायें और पाप की भावनायें कभी चैन से नहीं रहने देतीं। यदि सुखी, शान्त और सन्तुष्ट जीवन बिताने की कामना है, तो जीवन में आत्म-जिज्ञासा को स्थान देना ही होगा। उसकी खोज करनी ही होगी। जितना समय मनुष्य अहङ्कार के पोषण में लगाता है, सांसारिक उपलब्धियों की लालसा में व्यतीत करता है, यदि उसमें से कुछ निकाल कर आत्मा की खोज में लगाये, तो मङ्गलमार्ग पर बहुत कुछ आगे बढ़ सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अहङ्कार के वशीभूत होकर शारीरिक सन्तुष्टि तक सीमित रहने वाले अपनी भूल को तब समझ पाते हैं, जब जीवन में पतझड़ का समय आ जाता है और शरीर पीले पत्ते की तरह गिर जाने की स्थिति में होता है। उस पटाक्षेप के समय उसे निश्चय ही संसार की असारता, असत्यता और आत्मा की चिरंतनता और अविनश्वरता की प्रतीति होती है। तब समय निकल चुका होता है। उस अन्तिम समय में कुछ भी कर सकने का अवसर नहीं रहता। उस समय इस पश्चाताप के साथ संसार छोड़ने पर विवश होना पड़ता है कि जिस सत्य की खोज के लिये सुरदुर्लभ मानव-जीवन मिला था, उसकी उपेक्षा कर, हाय! हम तुच्छ बातों में ही लगे रहे। हमने वह सब कुछ किया, जो नहीं करना था और वह सब कुछ भी नहीं किया जो कर्त्तव्य था। उस घड़ी उस आत्मा की उपेक्षा करने वाले व्यक्ति की क्या हालत होती होगी? उसके हृदय में किस भयानक पछतावे और विवशता की आग जलती होगी, इसे तो वही बतला सकते हैं जिन्होंने इस स्थिति का भोग किया है अथवा जो आगे चलकर एक दिन करेंगे।

कितना अच्छा हो कि मनुष्य आवश्यकता भर अपने सांसारिक कर्त्तव्य करता रहे और बाकी का समय अध्यात्म मार्ग से आत्मा की खोज करने में भी लगाता रहे, तो उसके लोक-परलोक एक साथ बनते चलें। इस द्विमुखी साधना में जरा भी कठिनाई नहीं है। आत्म-जिज्ञासु व्यक्ति संसार में रमता हुआ भी उसकी अँधेरी वीथियों में नहीं भटकने पाता। उसकी यह जिज्ञासा उसके साथ रहकर प्रकाश का काम करती रहती है। सांसारिक कर्त्तव्यों के बाद वह उसको उसी प्रकाश मार्ग पर लौटा लाती है, जिसका अनुसरण इस वेदवाक्य को चरितार्थ कर देता है—

"असतो मा सद्गमय"

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

"मृत्योर्माऽमृतं गमय" (बृहदारण्यक० १.३.२८)

और तब मनुष्य का न केवल वर्तमान जीवन; बल्कि भूत भविष्यत् के भी सारे जीवन धन्य होते हैं। समस्त दुःख दूर हो जाते हैं। कोई भी अभाव नहीं सालता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मज्ञान से ही दुःखों की निवृत्ति सम्भव है—

अनेक लोग अभावों को ही दुःख का कारण मानते हैं। संसार में एक से एक बढ़कर साधन सम्पन्न व्यक्ति पड़े हैं; किन्तु क्या वे सुखी अथवा सन्तुष्ट होते हैं? अपने विपुल साधनों के बीच भी वे तरसते-तड़पते और आह-कराह करते नजर आते हैं। जिनको अभाव का दुःख नहीं, उन्हें रोग दोष आदि के शारीरिक दुःख से पीड़ित देखा जाता है, जिन्हें शारीरिक दुःख नहीं, वे काम, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, ताप, अनुताप, पश्चाताप,तृष्णा अथवा एषणाओं के मानसिक दुःखों से घिरे पाए जाते हैं। ऐसे भी अनेकानेक हो सकते हैं जिनको शारीरिक, मानसिक अथवा अभावजन्य दुःख न भी हों तो वे अज्ञान के दुःख से पीड़ित पाए जा सकते हैं। यदि एक बार कोई सज्जन अथवा साधु पुरुष इन दुःखों से न भी दुखी हों, तो भी उसके आस-पास रहने वाले दुष्ट लोग अकारण ही उसके लिए अप्रिय परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकते हैं। कोई दुर्घटना अथवा आधि-व्याधि ही उनके दुःख का कारण बन सकती है। प्रकृति-वाहित न जाने ऐसे कितने दुःख क्लेश इस संसार में आते रहते हैं जिनसे अमीर,गरीब,साधु और खल सभी एक समान पीड़ित होते हैं और कोई दुःख न भी हो, तो जन्म, जरा और मृत्यु का दुःख ही क्या कम है।

महात्मा बुद्ध एक राजकुमार थे। उनके जीवन में अभाव का-प्रश्न ही नहीं उठता। वे स्वस्थ, सुन्दर और सच्चरित्र भी थे, शारीरिक कष्ट का उन्हें कोई अनुभव नहीं होता था। सावधानी पूर्वक उनकी किसी भी इच्छा की पूर्ति की जाती थी। हर प्रकार से हर दशा में उन्हें पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने का सफल प्रयत्न किया जाता था। ऐसी स्थिति में मानसिक दुःख का उनके जीवन में कोई सम्बन्ध न था। उनकी पत्नी यशोधरा सुन्दर, स्वस्थ पतिव्रता एवं प्रिया थी। उनका पुत्र राहुल मन भावन तथा प्यारा था। तात्पर्य यह है कि राजकुमार सिद्धार्थ को अपनी प्रिय एवं अनुकूल परिस्थितियों में किसी प्रकार का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, अथवा आकस्मिक कोई दुःख न था। तब भी दुःख की अनुभूति से पीड़ित होकर वे अपनी प्रिय परिस्थितियों को छोड़कर संसार के दुःख दूर करने का उपाय खोजने के लिए साधु हो गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजकुमार सिद्धार्थ केवल एक बार ही अपनी अनुकूल परिस्थितियों तथा प्रिय वातावरण से निकलकर बाहर फैले हुए संसार में आए और एक रोगी, वृद्ध तथा मुर्दे को देखकर अनुभव कर लिया कि यह संसार दुःख-दर्दों से भरा हुआ दुःखालय है। उसका यह अनुभव सत्य यथार्थ एवं वास्तविक था। इसने उन्हें इतना कातर कर दिया कि आखिर वे संसार का दुःख दूर करने का उपाय खोजते-खोजते राजकुमार सिद्धार्थ से वैरागी बुद्ध बन गए।

वैदिक, औपनिषदिक, दार्शनिक एवं धार्मिक जितना भी आध्यात्मिक और ज्ञान-विज्ञान आदि का जो भी उच्च साहित्य है वह सब किसी न किसी रूप में उन सिद्धांतों का ही विस्तार है, जिनके द्वारा मनुष्य दुःख से निवृत्त होकर सुख की ओर अग्रसर हो सके। ऋषियों-मुनियों एवं दार्शनिकों से लेकर जो भी तपस्वी महात्मा एवं मनीषी, चिन्तक तथा विद्वान् हुए हैं। उन्होंने सारा जीवन मनुष्य के दुःख दूर करने और सुख पाने के उपाय खोजने में ही लगा दिया है। इन पावन प्रयत्नों एवं महान् जीवनों को देखते हुए यही मानना पड़ता है कि यह संसार वास्तव में दुःखालय ही है और दुःख से बचने का प्रयत्न ही मानव जीवन का उपक्रम है।

यह भी माना जा सकता है कि संसार में सुख का भी एक अंश है, जिसका प्रमाण, लोगों के हँसने-बोलने, गाने-बजाने, खेलने-कूदने तथा आनन्द मनाने से मिलता है। लोग हास-विलास तथा भोग-वैभवपूर्ण जीवन बिताते भी दृष्टिगोचर होते हैं; किन्तु यह सारे सुख क्षणभंगुर, अस्थायी, परिवर्तनशील एवं दुःख के परिणाम वाले ही हैं, न तो इनमें स्थायित्व ही है और न वास्तविकता। सुखों का यह सारा आयोजन भी एक तरह से दुःख से बचने का उपक्रम मात्र ही है। संसार में सुखों की अपेक्षा दुःखों का ही बाहुल्य एवं स्थायित्व है।

संसार में दुःखों का आधिक्य है और मनुष्य को संसार में रहना ही है, तो क्या दुःखों में उलझ-उलझ कर उसे अपना बहुमूल्य जीवन नष्ट कर देना उनका अटल प्रारब्ध है? नहीं मनुष्य का प्रारब्ध दुःख भोगना नहीं है। उसका लक्ष्य दुःखों पर विजय प्राप्त कर एक स्थायी सुख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya/Founder of All World Gayatri Pariwar/Other aspects of Life in Hindi, Gujarati, English, Marathi, Bengali, Telugu, Kannada languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त करना ही है। यही मनुष्य का पुरुषार्थ है और यही उनका श्रेय भी। दुःख से पूर्ण होने का कारण संसार को दुःखालय मानकर कष्ट एवं क्लेशों के बीच तड़प-तड़प कर मर जाना मनुष्य की लज्जास्पद पराजय है। मनुष्य की शोभा इसी में है कि दुःख से छूटने और सुख प्राप्त करने के लिए अखण्ड पुरुषार्थ किया जाये।

संसार की प्रत्येक वस्तु नाशवान् है, यहाँ तक कि शरीर भी। ऐसा जानकर जो बुद्धिमान उनके प्रति आसक्ति नहीं रखता, वह दुःख के विशेष हेतु मोहरूपी कटार से बचा रहता है। अन्यथा इनमें आसक्त व्यक्ति इनके क्षीण, क्षय अथवा नाश, वियोग से क्षण-क्षण पर दुःखी होता रहेगा। यदि यह वस्तुएँ उसके देखते-देखते नष्ट भी न हो, तब भी उनके नष्ट हो जाने अथवा बिछुड़ जाने की शंका सताया करती है। संसार की प्रत्येक वस्तु नश्वर एवं क्षयमान है। ऐसी बुद्धि रखकर जो मनीषी उनसे आत्मिक सम्बन्ध न रखकर व्यावहारिक सम्बन्ध रखता हुआ अनासक्ति का आचरण करता है। संसार की कोई भी हानि उसे दुःखी अथवा विचलित नहीं कर सकती है। दुःख असल में वस्तु के विनाश वियोग से नहीं होता। दुख का कारण वास्तव में उसके प्रति मनुष्य का वह मोह होता है, जिसे वह अज्ञानवश वस्तु से स्थापित कर लेता है।

महात्मा बुद्ध की खोज के अनुसार दुखों की निवृत्ति निर्वाण में है। अपने को राग-द्वेष से मुक्त कर लेना ही निर्वाण है, जिसे थोड़े से प्रयत्न द्वारा मनुष्य जीवन-काल में ही पाया जा सकता है। बुद्ध प्रतिपादित निर्वाण अवस्था को वैराग्य द्वारा शुद्धाचरण करते हुए, इस नाशशील संसार के चिरन्तन सत्यों में विश्वास रखने से, मनुष्य विषयों की विभीषिका और तृष्णाओं की मृग मरीचिकाओं से सुरक्षित रह कर दुःखों से निवृत्त हो सकता है।

सांख्य दर्शनकार ने आत्मा एवं अनात्मा के बीच अन्तर न समझने के अज्ञान को दुःखों का कारण बतलाया है। उनका कहना है कि मनुष्य जब अज्ञानवश अपने को शरीर मान लेता है तभी वह दुःखों का अनुभव करता है। दुःखों का अनुभव करना शरीर का धर्म है। शीत, धूप, वर्षा, भूख, प्यास, वियोग, बिछोह आदि अप्रिय परिस्थितियाँ शरीर को ही व्यापा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करती हैं और वही इनका अनुभव करता है। जब मनुष्य अपनी अनुभूतियों को शरीर तक सीमित कर लेता है अथवा अपने को शरीर मान लेता है स्वाभाविक ही है कि शरीर का कष्ट उसे अपना कष्ट अनुभव हो।

मनुष्य वास्तव में शरीर नहीं है। वह अनादि, अनन्त, चैतन्य एवं आनन्द स्वरूप आत्मा है। उसमें अज्ञान अथवा दुःखानुभूतियों का कोई विकार नहीं है वह निर्विकार, एकरस, चेतन तत्त्व है जिसको न तो शस्त्र काट सकता है, न पानी गीला कर सकता है, न हवा सुखा सकती है और न अग्नि जला सकती है। वह अपनी ज्योति से स्वयं प्रकाशमान ऐसा शिव एवं शाश्वत दीपक है, जिसको न तो विपरीततायें प्रभावित कर सकती हैं और न काल बुझा सकता है। आत्मा, शरीर, मन, इन्द्रियों तथा बुद्धि से भिन्न अविनाशी तत्त्व है जो कि सदा-सर्वदा स्वयं सन्तुष्ट एवं आनन्दित रहता है। उसे सुख के लिए न तो किसी वस्तु की अपेक्षा है और न किसी भोग की आवश्यकता। वह स्वयं ही आनन्दस्वरूप एवं शाश्वत है। मनुष्य यही अविचल एवं अविनाशी आत्मा है, शरीर नहीं। अब जो व्यक्ति अज्ञानवश अपने इस परमपद आत्मा से भिन्न होकर शरीर के निम्न पद पर उतर गये, वह उसकी विकृतियों से त्रस्त होगा ही। मनुष्य अपने को विकल आत्मा समझे, अपने सत्य स्वरूप में विश्वास करे और शरीर को नश्वर संसार का अंश मानकर उसके वि-कल्पनाओं से अप्रभावित रहकर दर्शन के रूप में देखें, तो निश्चय ही वह दुख के बन्धनों से मुक्त होकर सुख का अधिकारी बन सकता है।

वेदान्त दर्शन की व्याख्या कर जगद्गुरु शंकर ने दुःखों के निवारण का उपाय मोक्ष बतलाया है। मोक्ष की परिभाषा करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया है कि—इस सत्य ज्ञान की स्थायी अनुभूति ही मोक्षावस्था है कि—आत्मा देश से परे, शरीर तथा मन, बुद्धि से विलग स्वभावतःसत्य, नित्य एवं अविकल्पी है। ऐसी अनुभूति का साक्षात्कार कर लेने पर मनुष्य का शरीर अथवा मन का विकारों से प्रभावित होना समाप्त हो जाता है।

एक अज्ञात समय से निरन्तर शरीर एवं संसार के संसर्ग में रहते-रहते मनुष्य अपने सत्य स्वरूप आत्मा को ही नहीं भूल गया, बल्कि जगत् के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परम कारण परमात्मा को भी भूल गया है। संसर्गजन्य अविद्या के कारण वह परमात्मा के स्थान पर उसकी माया, इस संसार को ही सत्य समझ बैठा है जहाँ दुःख के सिवाय उसे कुछ भी हाथ नहीं लगता, तब भी उसे सत्य को जानने की प्रचण्ड जिज्ञासा नहीं होती।

यदि सच्ची जिज्ञासा का सहारा लिया जाय, तो आये दिन इस सत्य को अनुभव भी किया जा सकता है। यह सत्य तो सर्वथा मान्य ही है कि ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप है। संसार में जो कुछ सत्य, शिव और सुन्दर है, वह ईश्वर रूप है। जब मनुष्य किसी लहलहाती लता पर हँसते, झूमते किसी फूल को देखता है, तो उसे उसके प्रति एक आत्मिक आकर्षण हो उठता है। वह उस सुविकसित एवं सुवासित पुष्प को देखकर केवल प्रसन्न ही नहीं होता; बल्कि सोचने लगता है कि कितना अच्छा होता, यदि मैं भी इस पुष्प की तरह सुन्दर सुगन्धित और विकसित होता। इसी की तरह संसार को आनन्द देता, हँसता-खेलता और अपने ही आनन्द में मस्त होकर झूमता। हमारा रङ्ग-रूप भी इसी की तरह प्यारा-प्यारा और आडम्बर रहित होता।

मनुष्य जब वर्षा ऋतु में बादलों की गरज से मत्त होकर नाचते मोर को देखता है, तो ठगा सा खड़ा हो जाता है और सोचने लगता है— क्यों न मुझे इस मोर की तरह सुन्दर पंख मिले और क्यों न मैं भी इसकी ही तरह मस्ती पा सका। कितना सुख हो कि इसी की तरह मन मोहक कलेवर पाकर और इसी की तरह विभोरता पाकर मैं भी मनोमग्र होकर नृत्य कर सकूँ। इसकी वाणी की तरह मुझे भी लोकरंजक वाणी मिली होती, तो मैं भी बोल-बोल कर संसार को अपनी ओर आकर्षित कर लेता।

मनुष्य जब इतिहास के सत्पात्रों के विषय में पढ़ता अथवा उनकी वीरता, बलिदान और त्याग की गाथायें सुनता, किसी सत्पुरुष को जन-सेवा और लोकरंजन के कार्य करते देखता है, तो उसके मन में इच्छा होती है कि वह भी जनहित में ऐसे ही साहस और वीरता के काम कर सकता। इसी प्रकार त्याग एवं बलिदान द्वारा आत्मा को सुख दे पाता। इसी स्फूर्ति, दृढ़ता और उत्साह आदि गुणों का अधिकारी बनता, तो कितना आनन्द, कितना उल्लास और कितनी सुख-शान्ति होती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तात्पर्य यह है कि मनुष्य जिस ओर जहाँ भी सत्य, शिव और सुन्दर के साथ सद्गुणों का दर्शन करता है, उसकी आत्मा में वैसा बनने की प्यास जाग उठती है। उसे उन दृश्यों, उन गुणों और उन महानताओं से तादात्म्य अनुभव होने लगता है। उसकी वह कामना, जिज्ञासा अथवा इच्छा उसकी आत्मीयता की ही द्योतक होती है। वास्तविकता यह है कि आकर्षण, वह आत्मीयता उस दृश्य की नहीं होती, जिसे वह बाहर देखता है। उसकी सारी सौन्दर्यानुभूति उसकी अपनी अन्तरात्मा की होती है, जो दृश्य का अवलम्बन पाकर स्फुरित हो उठती है और जिसे वह अज्ञानवश बाह्य उपकरणों में मानता है।

मनुष्य का वही सुन्दर स्वरूप जिसे वह बाह्य दृश्यों पर आरोपित कर के देखता है, उसका अपना वास्तविक स्वरूप है, जिसकी उसे जिज्ञासा करनी चाहिये। उसी आन्तरिक सौन्दर्य और आनन्दानुभूति को बिना किसी उपादान अथवा आनन्द को देखना और पाना आत्म-साक्षात्कार है।

मनुष्य अपने आत्म रूप में बड़ा ही सुन्दर और आनन्दमय है। यही कारण है कि जब वह किसी को गंदा देखता है तो कभी कामना नहीं करता कि वह भी वैसा ही हो जाता। किसी अपराधी को जेल जाते देखकर उसके मन में यह जिज्ञासा कभी नहीं होती कि वह भी वैसा अपराध करके जेल जा सकता। किसी शुष्क वृक्ष अथवा निकृष्ट पशु-पक्षी को देखकर उसके हृदय में यह उत्सुकता नहीं होती कि वह भी उसी की तरह सूख जाता अथवा उसी की तरह कुरूप बन जाता।

इतिहास में किसी अत्याचारी अथवा आततायी का वर्णन पढ़कर मनुष्य के हृदय में यह भाव नहीं आता कि वह भी उसी की तरह रक्त-पात करता, दूसरों को पीड़ा पहुँचाता अथवा किसी का धन अथवा सामान लूटता/तो बड़ा आनन्द रहता। एक ओर जहाँ मनुष्य को सत्य, शिव और सुन्दर से प्रेम होता है, वहाँ दूसरी ओर दुष्टता, दुराचार और दुराशय से घृणा और विकर्षण भी होता है। यह विपर्यपूर्ण अनुभूति बतलाती है कि मनुष्य का वास्तविक स्वरूप सत्य, शिव और सुन्दर का प्रतिरूप है, उसके उस रूप में कुरूपता, असत्य और अमङ्गल का कोई स्थान नहीं है। ईश्वर का स्वरूप शिव और सुन्दर के सिवाय और कुछ नहीं है। अस्तु, उसका अंश भी अपने आदि स्रोत के समान उसी का स्वरूप है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निश्चय ही मनुष्य का सत्य रूप ईश्वर रूप ही है। अपने इस स्वरूप के विपरीत कार्य करने वाले तो पूरे मनुष्य नहीं माने जा सकते अथवा यह मानना होगा कि वे वह सब करके एक मौलिक अपराध कर रहे हैं, एक पाप कर रहे हैं, जो उन्हें नहीं करना चाहिये।

यह निश्चय हो जाने पर कि मनुष्य आत्मारूप में परमात्मा ही है, यदि वह अपने गौरव, अपनी गरिमा और अपने महत्त्व का प्रतिपादन नहीं कर पाता, तो यह उसकी कमी ही कही जायेगी। किसी महान् पिता का पुत्र होकर भी, किसी शक्तिशाली का अंग होकर भी यदि कोई अपने आप में निकृष्ट और दीन-हीन बना रहना चाहता है, तो यह उसका दुर्भाग्य ही माना जायेगा। अन्यथा अपने उच्च-से-उच्च सर्वोच्च स्वरूप का ज्ञान हो जाने पर निकृष्ट वासनाओं और तुच्छ भोगों में पड़े रहना सम्भव न होगा। ऐसे महान् व्यक्तित्व के पास ईर्ष्या-द्वेष, छल कपट, शोषण, क्रूरता आदि आसुरी वृत्तिया का क्या काम रह सकता है।

आइये! अपने अन्दर जिज्ञासा जाग्रत कर अनुभव के आधार पर अपने सत्यस्वरूप का साक्षात्कार करें, उसमें विश्वास और उसी के अनुरूप अपना आचरण बनायें। यदि इस विकास में हमारी निम्न वृत्तियाँ बाधक बनती हैं, तो मानलें कि यही वह अवरोध है, यही वह आवरण है, जो हमें अपने वास्तविक स्वरूप की ओर जाने और उसे देखने में बाधा डाल रहा है। सौन्दर्यानुभूति और सत्कर्मों की ओर से चलकर और ईर्ष्या-द्वेष, मद, मत्सर, लोभ, क्रोध आदि दूषणों (दोषों) को छोड़ते हुए आत्म स्वरूप की ओर सरलता पूर्वक पहुँचा जा सकता है।

हम सब परमपिता परमात्मा, उस सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् तत्त्व उस आदि एवम् अन्तिम स्रोत से निकली इकाइयाँ हैं, जिनका वास्तविक स्वरूप वही एक अणु एवम् विभु है। अपने उस स्वरूप को पहचानने और तदनुरूप होकर उसी स्वरूप को प्राप्त करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चेतन आत्मा का चिन्तन

आत्मा के स्वरूप, स्वभाव और अनुभूति की व्याख्या करते हुए ऋषि ने बताया—विश्व के सम्पूर्ण प्राणियों में व्याप्त चेतना ही आत्मा है। वह अति गूढ़ निर्गम तत्त्व है, इसलिए लोग प्रत्यक्ष नहीं देख पाते। स्पष्टतया चित्त-वृत्तियाँ गतिशील जान पड़ती हैं, इसलिए मन या चित्त को ही आत्मा होने का भ्रम होता है, वस्तुतः चित्त आत्मा नहीं है। वह परम प्रकाश तत्त्व है।

एकमात्र चिन्तन ही वह उपाय है जिसके द्वारा चेतना की, आत्मा की अनुभूति और प्राप्ति सम्भव है। विद्वज्जन उसी अक्षर, अविनाशी अजर-अमर आत्मा का चिन्तन करते हैं। लौकिक जीवन से उतना ही सम्बन्ध रखते हैं जितना आत्मा के आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है

अन्यथा आत्मा के गुणों और कौतुक का चिन्तन ही उनका स्वभाव होता है। उसी में असीम तृप्ति भी है।

दीर्घतमा के शिष्यों में उस दिन विलक्षण खामोशी थी। इतिहास, भूगोल, जीव-विज्ञान, रसायन विज्ञान के पाठ्यक्रम भली-भाँति समझ में आ जाते थे, किन्तु "आत्म-विद्या" का विषय ही इतना गूढ़ और रहस्यपूर्ण है कि दीर्घतमा के बहुत प्रयत्न और विश्लेषण करने के बावजूद भी विद्यार्थी उसे समझ न पाए।

आत्मा का विषय प्रत्येक विद्यार्थी का निजी विषय था, इसलिए उसकी सर्वोपरि आवश्यकता भी थी। जब वह कक्षा आती थी उनकी गम्भीरता भी बढ़ जाती और तन्मयता भी; किन्तु आज भी आत्मा के चेतन स्वरूप का बोध विद्यार्थियों को नहीं हो पाया।

मध्याह्न के पूर्व ही एकाएक विद्यालय बन्द की शंखध्वनि कर दी गई। विद्यार्थियों के हृदय "मैं क्या हूँ, कहाँ से आया हूँ, क्यों आया हूँ?" इन प्रश्नों को जानने के लिए पहले से ही बेचैन हो गये। सब विद्यार्थी एक-एक कर अपने पर्णकुटीरों में चले गए। मध्याह्न की हलचल उस दिन किसी ने नहीं सुनी। सम्पूर्ण आश्रम उस दिन विधवा की-सी शान्ति में डूबा हुआ था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सूर्य का रथ थोड़ा पश्चिम की ओर झुका और घण्टा पुनः बजा। विद्यार्थी एकत्रित हुए, किसी के हाथ में न तो लेखनी थी न भोजपत्र। कोई घोषणा भी न थी। छात्र एकत्रित हो गये, तो ऋषि एक ओर चल पड़े। चुपचाप विद्यार्थियों ने भी उनका अनुगमन किया। एक ही पंक्ति में अनुशासनबद्ध गुरु का पीछा करते हुए चल रहे थे।

गाँगेय के श्मशान-घाट पर दल रुक गया। घाट की सीढ़ियों के सहारे एक शव अटका हुआ था। ऋषि उसके समीप पहुँच गए। सब विद्यार्थी सीढ़ियों पर पंक्तिबद्ध बैठ गए।

ऋषि ने पाठ शुरू किया। शव के एक-एक अङ्ग की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा—इन दोनों हाथों की तुलना अपने हाथों से करो, वैसी ही बनावट, माँसल उँगलियों से युक्त; किन्तु ये हाथ न हिलते हैं, न डुलते हैं। आँखें हैं, पर वह देखती नहीं। कान हैं, पर सुनते नहीं। जिस मुख ने सैकड़ों सुस्वादयुक्त पदार्थों को चखा, मुख आज भी वही है; पर अब वह खा भी नहीं सकता। नाक साँस ले नहीं रही। हृदय स्थान पर होने वाली धक-धक भी बन्द है। यह सारा शरीर ज्यों का त्यों है; पर इसके लिए रूप, रस, गन्ध, आकाश, सूर्य-चन्द्रमा, प्रकाश, वर्षा, अग्नि आदि सम्पूर्ण वस्तुएँ अस्तित्वहीन हैं।

इस शरीर को क्रियाशील बनाने वाली शक्ति इससे ऐसे ही अलग हो गई है जैसे अंगारे से ऊष्मा और जल से शीतलता। जब तक वह शक्ति थी, तब तक यही शव क्रियाशील बना हुआ था। शक्ति न होने पर वही आज मुर्दा है।

चींटी-चिड़िया, हाथी, व्हेल, गाय, बैल, गरुड़, कौवा, गीध आदि से लेकर मनुष्य तक इन सबमें एक ऐसी चेतनता है। किसी की शक्ति कम है, किसी की अधिक। वृत्तियाँ और संस्कार भी अलग-अलग हैं; किन्तु देखने-सुनने, काम करने, इच्छाओं की पूर्ति में संलग्न रहने, प्रेम प्रदर्शित करने, काम व्यक्त करने, आहार-निद्रा, भय, मैथुन की प्रवृत्ति सबमें एक जैसी है। सभी में यह शक्ति एक ही गुण रूप वाली मिलेगी। यह शक्ति प्रत्येक प्राणी में सन्निहित है, समायी हुई है, इसलिए इसे आत्मा कहते हैं। यह आत्मा ही प्रकाश, शक्ति अथवा चेतना के रूप में विभिन्न शरीरों में व्याप्त है, यद्यपि शरीर से उनका कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्ध नहीं। वह अजर-अमर, अविनाशी और सतत चेतनायुक्त है; पर स्थूल पदार्थ के साथ संगम हो जाने के कारण ऐसा भासता है कि वह जन्म लेता है और मृत्यु को भी प्राप्त होता है। सुख-दुःख का कारण यही विभ्रांति ही है।

चेतना आत्मा विशुद्ध तत्त्व है। चित्त उसका एक गुण है। इच्छायें, वासनायें ये चित्त हैं, प्रवृत्तियाँ हैं, किन्तु आत्मा नहीं। इसलिए जो लोग शारीरिक प्रवृत्तियों का काम, भोग, सौन्दर्य सुख को ही जीवन मान लेते हैं। वह अपने जीवन धारण के उद्देश्य से भटक जाते हैं। चेतना का जन्म यद्यपि आनन्द, परम आनन्द, असीम-असीम आनन्द की प्राप्ति के लिए ही हुआ है। तथापि चित्तवृत्तियाँ उसे क्षणिक सुखों में आकर्षित कर पथभ्रष्ट करती हैं। मनुष्य इसी सांसारिक काम क्रीड़ा में व्यस्त बना रहता है, तब तक चेतना की अवधि समाप्त हो जाती है और वह इस संसार से दुःख, प्रारब्ध और संस्कारों का बोझ लिए हुए विदा हो जाता है। चित्त की मलीनता के कारण ही वह अविनाशी तत्त्व, इस संसार में बार-बार जन्म लेने को विवश होते हैं और परमानन्द से वंचित होते हैं। सुखों में भ्रम पैदा करने वाला यह चित्त ही आत्मा का—चेतना का बन्धन है।

"आत्म-ज्ञान के बिना किसी भी काल में किसी को भी मुक्ति नहीं मिलती"—ऋषि इस विषय को आगे बढ़ाते हुए अपनी वक्तृता जारी किये हुए थे। तभी एक छात्र ने पूछा— "गुरुदेव? यह आत्मा जब इतना सूक्ष्म, गूढ़ और रहस्यपूर्ण है, तो उसे पाया कैसे जा सकता है? कैसे इन चित्तवृत्तियों के दाँव से छुटकारा पाया जा सकता है।"

संकेत कर छात्र बैठ गया—ऋषि ने शंका का समाधान करते हुए बताया— "मैं शरीर हूँ जब तक जीव यह मानता रहेगा, तब तक करोड़ उपाय करने पर भी शाश्वत सुख-शान्ति, जो आत्मा का लक्ष्य है, नहीं उपलब्ध हो सकती। हम शरीर नहीं हैं, शरीर में तो हम बैठे हैं, वाहन बनाये हैं, घुसे हैं, निश्चय है; फिर भी हम अपने को शरीर मानकर सारा व्यवहार करते हैं पहले इस धारणा को बन्द करना चाहिए और निश्चय करना चाहिये—मैं शरीर नहीं, शरीर, इन्द्रिय, मन और बुद्धि आदि अन्तःकरण चतुष्टय से परे अलग शुद्ध आत्मा हूँ। कुछ दिन इसका निरन्तर चिन्तन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने से अपनी आत्मिक धारणा पुष्ट हो जाती है और आत्म-कल्याण का मार्ग दिखाई देने लगता है।

ऋषि गम्भीर विवेचन में उतर गये। सूर्यदेव अस्ताचल की ओर बढ़ चले; किन्तु आत्मा का विषय ही इतना आनन्दप्रद था कि सम्पूर्ण छात्र निश्चल भाव से तन्मयता की मुद्रा में बैठे रहे। न उनकी जिज्ञासा तृप्त होती थी, न उठने की किसी को इच्छा ही थी। आश्चर्य और कौतूहल से सभी ध्यानपूर्वक गुरुदेव की व्याख्या सुनने में निमग्न थे। ऋषि ने आगे बताया—

'आत्मा स्वयं ज्ञानस्वरूप है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए न कोई परिश्रम करने की आवश्यकता है, न यत्न की। कठिन साधनों से अप्राप्य वस्तु के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। जो स्वयं ज्ञान रूप है उसे अपने आपको ढूँढ़ने के लिए न तो जंगलों में भटकने की आवश्यकता है, न जीवन को शुष्क और कठोर बनाने की। अपने आप में अहंकार का जो भाव है, केवल उसे मिटा देने की आवश्यकता है। क्योंकि यह भ्रम भी आत्मा की तरह अनादि और शान्त है। इसलिए अपने शक्ति स्वरूप, ज्ञान स्वरूप चेतनता की धारणा को पुष्ट बनाने के लिए गहन चिन्तन की आवश्यकता पड़ती है। आत्मा की प्राप्ति के लिए जितने भी साधन और उपासनाएँ बनाई गई हैं वह केवल इसी बात को परिपुष्ट करने के लिए है कि— "तुम शरीर नहीं, मन और इन्द्रियाँ भी नहीं हो, इनसे परे अनन्त शक्ति स्परूप आत्मा हो—आत्मा बन्धन रहित है। अपनी इच्छा संकल्प बल से कहीं भी विचरण कर सकती है। प्रकाश खेल खेलता है, न उसका कोई बन्धु है न बान्धव, पुत्र न कलत्र, सब विविध रूप आत्माएँ ही अपनी-अपनी चित्तवृत्तियों के कारण भाई, पिता, माता ऐसे भासते हैं, यह बन्धन से छूटकर राग-द्वेष ममता छोड़कर, केवल कर्त्तव्य पालन को ध्यान रखता हुआ जो व्यक्ति आत्मा में ही रमण करता है, आत्मा का ही चिन्तन करता है, आत्मा के गुणों के अनुरूप आचरण करता है, अन्त में वह सांसारिक, ऐश्वर्य और भोगों को भोगते हुए भी आत्मा को प्राप्त कर लेता है। मन, प्राण एवं प्रकृति के परिवेश से प्रकट रूप में पृथक् प्रतीत होने पर भी हम आप सब वस्तुतः एक ही आत्मा की अभिव्यक्तियाँ हैं। इसे यों भी कहा जा सकता है कि आत्मा ही विभिन्न रूपों में व्यक्त होकर उन्मुक्त चेतना परमात्मा में परिणत होना चाहती है। जो इस तत्त्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रूप को खोजते हैं, वह तो अपना लक्ष्य पा जाते हैं और जो अपने चित्त की अहंवृत्तियों में ही भूलते-भटकते रहते हैं। वह सुख स्वरूप होने पर भी दुःख भुगतते हैं, बन्धन मुक्त होने पर भी बन्धनों में पड़े रहते हैं।

जीवित अवस्था में जो यह कहा करता था यह मेरा धन है, घर है, बार है, मैं खाता हूँ, मैं पंडित हूँ, ज्ञानी हूँ। मेरा सौन्दर्य सबसे बढ़कर है। आज वही बोलने वाला कहीं खो गया है। यद्यपि शरीर ज्यों का त्यों विद्यमान् है। मन और अहंकार से अपने को भिन्न समझने में ही आत्मा का सारा रहस्य छिपा हुआ है। चिन्तन के इस सिद्धान्त से इसी सिद्धान्त की पुष्टि होती है।

यह आत्मा, मन और अहंकार से अलग रहकर अपना काम किया करती है। मन और अहंकार वस्तुतः जागतिक अवस्था के कारण हैं जबकि आत्मा शाश्वत और अनादि है। विद्वज्जन इसीलिए निरन्तर आत्मा का चिन्तन करते और अन्त में सुखपूर्वक उसी भाव में अन्तर्हित होकर परमात्मा की शरण में चले जाते हैं।

सूर्य लगभग ढलने को था। सन्ध्या का समय हो चुका था। जब यह ध्यान कर उन्होंने अपना पाठ समाप्त किया, तो विद्यार्थियों को ध्यान टूटा। उन्होंने अनुभव किया कि कुछ समय के लिए वे सब ऐसे लोक में, चिन्तन की गहन स्थिति में पहुँच गए थे, जो आत्मा का यथार्थ लक्ष्य है। सबको अपना पाठ समझ लेने का सन्तोष था। ऋषि के पदों का अनुसरण करते हुए सभी विद्यार्थी गुरुकुल लौट आए और अपने-अपने सन्ध्या पूजन में लग गए।

आत्मा को जानिए-

मनुष्य पाप, बुढ़ापे, मृत्यु, भूख, प्यास की चिन्ता तथा भय के कारण अनेक संकल्प विकल्प के उत्पन्न होने वाले शोक, उद्विग्नता आदि से जीवन के सहज स्वाभाविक सुख और उपलब्धियों का भी लाभ नहीं उठा पाता। सुरदुर्लभ मानव जीवन को भार, अभिशाप मानकर जीता है। भय की कुकल्पनाएँ उसे चैन से नहीं सोने देतीं, न सुखी जीवन बिताने देती हैं। इन सबसे छुटकारा पाकर जीवन को सुखी मधुर बनाने की खोज मनुष्य सदा से ही करता आया है। उपनिषद्कार ने इसी को महत्त्व देते हुए कहा है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

''य आत्मापहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघत्सोऽपिपासः सत्यकामः सत्यसंकल्पः सोऽन्वेष्टयः स विजिज्ञासितव्यः।''
(छान्दोग्य० ८.७.१.)

''जो निष्पाप, जरारहित, अमर्त्य, शोकरहित भूख-प्यास से मुक्त, सत्यकाम, सत्य संकल्प है, उसे ही ढूँढ़ना चाहिए। उसे ही जानने की इच्छा करनी चाहिए और वह तत्त्व है 'आत्मा'।''

वस्तुतः आत्मा ही जरा-मरण, भूख-प्यास, समस्त भय सन्देह संकल्प-विकल्पों से रहित नित्य मुक्त, अजर-अमर अविनाशी तत्त्व है। उसे जान लेने पर ही मनुष्य समस्त भय, शोक, चिन्ता, क्लेशों से मुक्त हो जाता है।

आत्मा सर्वव्यापी नित्य तत्त्व है। आत्मा ही जीवन का मूल मानव सत्य है। आत्मा के प्रकाश में ही बाह्य संसार और मानव जीवन के कार्य-कलापों का अस्तित्व है। आत्मा के पटल पर ही संसार और दृश्य जीवन का छाया-नाटक बनता बिगड़ता रहता है। संसार जो कुछ भी है, वह आत्मा की अभिव्यक्ति और उसका विस्तार है। ऐतरेय ब्राह्मण (१.१) में आया है—

''आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत् नान्यत्किञ्चनमिषत्। स ईक्षत लोकान्नुसृजा इति।''

पूर्व में केवल एकमात्र आत्मा ही धी अन्य कोई तत्त्व नहीं था। उस आत्मा में से ही अनेकों लोकों का सृजन हुआ। छान्दोग्य उपनिषद् (७.२५.२) में लिखा है—''आत्मैवेदं सर्वम्'' आत्मा ही यह सब है। आत्मा के धरातल पर ही दृश्य जगत् के घरौंदे बनते बिगड़ते रहते हैं। सृजन और संसार का चक्र चलता रहता है; किन्तु यह आत्म तत्त्व अपने नित्य स्वरूप में स्थिर रहता है सदा-सदा। अनन्त आकाश के मध्य ग्रह-नक्षत्रों का क्रिया कलाप चालू रहता है। अनेकों उल्कायें नक्षत्र बनते-बिगड़ते रहते हैं; किन्तु आकाश अपने गुर गम्भीर अविचल स्वरूप में नित्य ही स्थिर रहता है। इसी तरह सर्वत्र व्याप्त आत्म तत्त्व के मध्य पदार्थों का सृजन और विनाश होता रहता है; किन्तु आत्म तत्त्व पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता, वह सदा सर्वदा नित्य है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सर्वव्यापी विराट् आत्मसत्ता ही ब्रह्म है। "**अयमात्मा ब्रह्म**" (बृ० उप० २.५.१९) यह आत्मा ही ब्रह्म है, ऐसा उपनिषद्कार ने अपनी अनुभूति के आधार पर कहा है। आत्मा ही परमात्मा है-ईश्वर है। आत्मतत्त्व जब जगत् देह इन्द्रिय तथा संसार के पदार्थों को प्रकाशित करता है, तो अनेक रूपों में दिखाई देता है। जिस तरह जल की बूँदें समुद्र पर गिरते समय अलग-अलग दिखाई देती है; किन्तु गिरने से पूर्व और गिरने पर वह अथाह सिन्धु के रूप में ही होती है। आत्मा भी आदि अन्त में हमेशा ही स्थिर रहने वाला नित्यतत्त्व है। जो विराट् है, भूमा है- "**यो वै भूमा।**" आत्म प्रबोध उपनिषद् (१९) में लिखा है—

"**घटावभासको भानुर्घटनाशे न नश्यति।**
देहावभासकः साक्षी देहनाशे न नश्यति॥"

"जिस तरह घड़े को प्रकाशित करने वाला सूर्य घड़े के नष्ट होने पर नष्ट नहीं होता है, उसी तरह देह के नाश होने पर आत्मा का नाश नहीं होता।" सूर्य का प्रकाश विभिन्न घड़ों में पड़ते समय अलग-अलग सा जान पड़ता है। लेकिन सूर्य अखण्डित ही रहता है। इसी प्रकार आत्मा भी विभिन्न देह पदार्थों को प्रकाशित करते हुए खण्ड-खण्ड नहीं होता। अथाह धरती के धरातल पर बच्चे मिट्टी के छोटे-छोटे अनेकों घरौंदे बनाते है, बिगाड़ते हैं, मूर्तिकार अनेकों मूर्तियाँ बनाता है; फिर वे समय पर नष्ट भी हो जाती है। इस पर भी आदि अन्त में मिट्टी, धरती अपने नित्य स्वरूप में ही स्थिर रहती है। ठीक इसी तरह आत्मा के पटल पर संसार और अनेकों पदार्थों का बनना बिगड़ना जारी रहता है; किन्तु आत्मतत्त्व अपने नित्य स्वरूप में ही स्थिर रहती है। ठीक इसी तरह आत्मा के पटल पर संसार और अनेकों पदार्थों का बनना बिगड़ना जारी रहता है; किन्तु आत्मतत्त्व अपने नित्य स्वरूप से स्थिर रहता है।

इस तरह मानव जीवन, समस्त संसार और पदार्थों की मूलसत्ता, सर्वव्यापी आत्मतत्त्व को जान लेने पर मनुष्य-जीवन में होने वाले विभिन्न परिवर्तन, सृजन और विनाश, लाभ, हानि, सुख-दुःख, भय-शोक आदि से मुक्त हो जाता है। उसके समस्त पाप-ताप, विकृतियाँ तिरोहित हो जाती हैं। आत्मविद् होकर आत्मस्थित होकर मनुष्य सुख-शान्ति आनन्द की सहजावस्था प्राप्त कर लेता है। आत्मा की सत्यता का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ज्ञान हो जाने पर मनुष्य स्वतः ही संसार और इसके पदार्थों से अलिप्त, निस्पृह बन जाता है। वस्तुतः संसार और इसके पदार्थों को जीवन का सत्य मानने वाले ही विभिन्न उपायों से पदार्थ उपकरण आदि संग्रह करते हैं, इसके लिए एक दूसरे का अहित, शोषण, नाश करने में भी नहीं चूकते। पदार्थों की चकाचौंध में परस्पर टकराकर, दिन-रात अशान्त क्लेश उद्विग्नता के भागी बनते हैं। लेकिन आत्मविद् संसार और इसके पदार्थों की क्षणभंगुरता, अनित्यता को जानकर आत्मा के स्वभाव अनुसार दिव्य कर्म, दिव्य गुणों से मुक्त हो स्वर्गीय जीवन बिताता है। वह पदार्थों की मोहक गन्ध पर गिद्धों की तरह नहीं टूटता न किसी से लड़ता है।

देह, इन्द्रिय और सांसारिक पदार्थों को महत्त्व देने पर ही जीवन में विभिन्न राग-द्वेष की आशा, अभिलाषाओं का चक्र चलता है। जब मनुष्य इससे ऊपर उठकर आत्मा के व्यापक विराट् स्वरूप में स्थित होता है, तो पदार्थों की तुच्छता, देह इन्द्रिय की अनित्यता क्षणभंगुरता का ज्ञान हो जाता है, तब फिर वह अमूल्य मानव जीवन को इन तुच्छ बातों में नष्ट नहीं करता और इसी के साथ उसका समस्त दुख-द्वन्द्व तिरोहित हो जाते हैं।

सर्वत्र आत्मा के स्वरूप को देखने वाले आत्मविद् के अन्तर से विश्व प्रेम की सुरसरि बहने लगती है। सत्य, प्रेम, आनन्द आदि आत्मा के गुण धर्म हैं। जिस अन्तर में ये पुण्य धाराएँ बहती रहती हैं जो आनन्द शान्ति, संतोष प्राप्त होता है, उसे अनुभवी ही जानते हैं। सबको आत्मामय देखने वाला व्यक्ति सबको प्रेम करेगा। सबसे प्रेम, सबकी सेवा, सबके आनन्द की अनुभूति आत्मविद् के स्वभाव का अङ्ग बन जाती है।

आत्मा का ज्ञान मनुष्य को जरा-मरण के भय से मुक्त करता है। वस्तुतः जरा और मृत्यु का भय, चिन्ता इतनी भयावह होती है कि इससे मनुष्य का जीवन सत्त्व तेजी के साथ नष्ट होने लगता है। भय की प्रबल प्रतिक्रियाओं से लोग अचानक मरते देखे जाते हैं; लेकिन सब भयों का,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खासकर सबसे बड़े मृत्यु-भय उच्छेद आत्मज्ञान से तत्क्षण ही हो जाता है; क्योंकि आत्मा जरा-मरण के बन्धनों से मुक्त है। कठोपनिषद् में आत्मद्रष्टा ऋषि ने कहा है-

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं, कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो, न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

(कठो० १.२.१८)

यह चैतन्यस्थ आत्मा न कभी जन्म लेता है, न कभी करता है, न तो यह कभी पैदा हुआ और न इससे कोई पैदा हुआ। यह अजन्मा है, नित्य है, शाश्वत है, चिरन्तन है। शरीरों के नष्ट हो जाने पर भी यह नष्ट नहीं होता। आत्मा अक्षय, अजर-अमर नित्य तत्त्व है, जो चिरन्तन होने से जन्म-मृत्यु से परे है।

इस तरह आत्मा को अजर-अमर अनिवाशी तथा चिरन्तन सत्ता का ज्ञान-बोध हो जाने पर मनुष्य जरा-मरण एवं सभी प्रकार के भयों से मुक्त हो जाता है। आत्मविद् के लिए मृत्यु एक वस्त्र बदलने जैसी प्रक्रिया मात्र है। आवश्यकता पड़ने पर वह हँसते-हँसते मौत का आलिंगन करने में भी नहीं चूकता; क्योंकि इससे उसका शरीर नष्ट होता है, आत्मा नहीं।

इसलिए जीवन में परितोष की प्राप्ति के लिए, सत्य, प्रेम, आनन्द की व्यापक अनुभूति के लिए जीवन के सत्य की प्राप्ति के लिए सर्व ओर से निर्भय, निर्द्वन्द्व निश्चिन्त बनने के लिए आत्म तत्त्व में प्रवेश पाने, उसे जीतने उसे स्थिर रहने के लिए नित्य हो प्रयत्न करना आवश्यक है। आत्मा ही ज्ञातव्य, ध्यातव्य और सतत स्मरणीय है।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

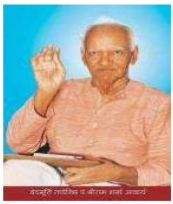

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org